बरिस : २
अंक-7

अक्टूबर-दिसंबर
2020

सँझवत

भाषा, साहित्य, संस्कृति अउर शोध के भोजपुरी त्रैमासिक

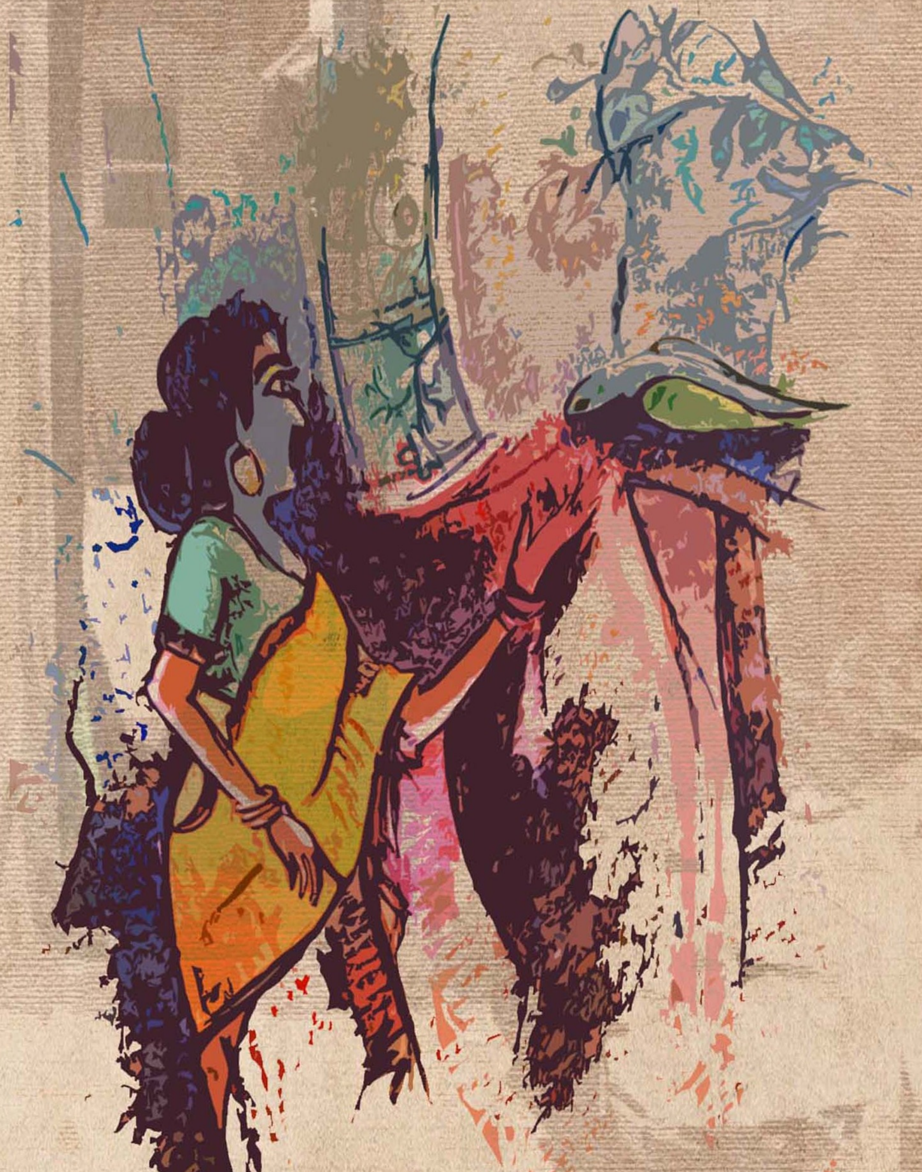

सँझवत

(भाषा,साहित्य,संस्कृति अउर शोध के भोजपुरी त्रैमासिक)

परामर्श मंडल

डॉ. नंदकिशोर तिवारी

डॉ. नर्वदेश्वर राय

श्री भगवती प्रसाद द्विवेदी

डॉ. ब्रजभूषण मिश्र

डॉ. अरुणमोहन 'भारवि'

डॉ. नीरज सिंह

डॉ. जयकांत सिंह 'जय'

संपादक व प्रकाशक

सीमा मिश्र

प्रधान संपादक

डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल

सँझवत

(भाषा,साहित्य,संस्कृति,अउर शोध के भोजपुरी त्रैमासिक)

अक्टूबर-दिसंबर, 2020, वर्ष-2, अंक-7

ऑनलाइन : sanjhavat.blogspot.com

प्रधान संपादक

डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल

संपर्क : 9831649817 (साँझि 6 बजे से 9 बजे तक)

संपादक

सीमा मिश्र

वर्तमान संपादकीय संपर्क (पत्राचार) :

2/6, पार्वती कंप्लेक्स, प्रथम तल, पार्वती नगर, जी.पी.रोड,

पोस्ट- बंगाल एनमेल, जिला- नॉर्थ 24 परगना (प.बं.) पिन- 743122

ई मेल : sampadaksanjhavat@gmail.com

स्थायी प्रकाशन स्थल (प्रस्तावित)- पटना

संपादन/प्रकाशन : अवैतनिक/अव्यावसायिक

वार्षिक शुल्क (पत्रिका रजिस्टर्ड डाक से प्रेष्य) : ₹310/-

एह अंक के कीमत : □60/- (रजि. डाक से- □80/-)

एह अंक के आवरण सज्जा : पंकज तिवारी

विशेष प्रतिनिधि :

दिल्ली- श्री केशव मोहन पांडेय

पटना- श्री भगवती प्रसाद द्विवेदी

आरा- श्री कृष्ण कुमार

बक्सर- डॉ. अरुणमोहन ‘भारवि’

मुजफ्फरपुर- डॉ. ब्रजभूषण मिश्र

प्रकाशित रचनन का विचारन से पत्रिका-परिवार के सहमति जरूरी नइखे। अपना रचना खातिर लेखक खुदे जिम्मेदार होइहें। विवाद का स्थिति में न्यायक्षेत्र पटना होई।

स्वत्वाधिकारी सीमा मिश्र द्वारा संपादित, कंपोज्ड अउर प्रकाशित। अव्यावसायिक प्रकाशन।

विषय-क्रम

संपादकीय

1. बदल रहल बा भोजपुरी का प्रति नजरिया/6

लेख/संस्मरण

2. रघुवीर नारायण - राजीव उपाध्याय/10
3. जेकर जीवन भोजपुरी पर नेवछावर रहे - डॉ. ब्रज भूषण मिश्र/17
4. छठ मइया के परब आ एकर महातम - सौरभ पांडेय/28
5. कब तक चली भोजपुरी का सङे दगाबाजी - श्यामबिहारी श्यामल/33
6. हमार गाँव - तारकेश्वर राय 'तारक'/38
7. आचार्य-कवि पंडित धरीक्षण मिश्र - केशव मोहन पांडेय/59
8. कृष्णानंद कृष्ण : एगो इयाद - रामनिहाल गुंजन/65

कहानी/लघुकथा

9. बंद - डॉ. अरुणमोहन 'भारवि'/16
10. मास्टर साहेब - डॉ. जयकान्त सिंह 'जय'/22
11. किराया के परिवार- आनन्द सन्धिदूत/47

एकांकी

12. मोकदमा - निर्भय नीर/43

कविता

13. गजल - विद्या शंकर विद्यार्थी/51
14. गीत लिखीं - सतीश प्रसाद सिन्हा/52
15. मुट्ठी में त आज हमरो आसमान बा - विजयानंद विजय/54
16. कवि कुलभूषण स्व.अंजन जी का प्रति उद्गार - कन्हैया प्रसाद रसिक /54
17. वसंत - संगीत सुभाष/55
18. गजल - रामरक्षा मिश्र विमल/55
19. गजल - अनीताशाह/56
20. गीत - रामेश्वर प्रसाद सिन्हा 'पीयूष'/56

एह अंक के छंद- सरसी

21. चलीं जा प्रेम बाँटे - गीता चौबे ‘गूँज’/53

स्तंभ

22. धरोहर - आचार्य अंबिका दत्त त्रिपाठी 'व्यास' के एगो गीत/5
23. कार्टून साहित्य - भोजपुरी पंच- पंकज तिवारी/21
24. किताबि : एक नजर में/32, 57-58,64
25. समीक्षा विशेषांक/27
26. लेखक लोगन से आग्रह/51
27. सोस्ती सिरी पत्री लिखी/68-72

ई गीत पिछला चार दसकन से भोजपुरी गायकन के कंठहार बनल बा।

आचार्य अंबिका दत्त त्रिपाठी 'व्यास'

जन्म : सन् 1934 में डुमराँव, जिला- बक्सर (बिहार) में।
अवसान : 25 अगस्त 2006
संस्कृत, हिंदी आ भोजपुरी के साहित्यकार।
प्रकाशित किताबि : उर्वशी, तपस्विनी महाश्वेता, जीवन गीत, करम कमण्डल, परिवाराय स्वाहा ।

गीत

हम जनम भर केहू के मनावत रहीं,
केहू माने न माने त हम का करीं,
आसरा में उमरिया बितावत रहीं,
केहू जाने न जाने त हम का करीं।

हम ओसारा से टुक-टुक निहारत रहीं,
ऊ दुआरे से ताके बिना चल गइल,
बेकली मन के मन ही अगिन बन गइल,
मेघ जंगल में आइल त हम का करीं।

आस में साँस अँटकल, अँटक के रुकल,
उनका हमरा जिये से न मतलब रहे,
हम त जीअत रहीं उनके देखे बदे,
मौत आइल न आइल त हम का करीं।

उनके पीछे भुला गइलीं आपन डगर,
दिन दहाड़े न आवत रहे कुछ नजर,
राह अइसन भुलाइल कि खोजत रहीं,
उम्र सगरी भुलाइल त हम का करीं।

- आचार्य अंबिका दत्त त्रिपाठी 'व्यास'

संपादकीय

बदल रहल बा भोजपुरी का प्रति नजरिया

शुरुआत में सोशल साइट पर भोजपुरी में जवन कुछ लिखल आ शेयर कइल जात रहे, ऊ कतहीं से श्लाघ्य ना रहे। ओहमें भोजपुरी के एकाध गो शब्द डालि दियात रहे आ लोग-बाग ओकरे के शेयर कइके अपना भोजपुरी ज्ञान आ प्रेम पर गर्व करत रहन। ई काम हाँ खाँ तक चलत रहल हा। बाकिर हमेशा सुखारिये ना नु रही ! भोजपुरिया लोगन का जीवट के दाद देबेके परी। बहुत जल्दी एह दृश्य में बदलाव आइल शुरू हो गइल। आजु सोशल साइट पर भोजपुरी में साहित्यिक, सांस्कृतिक आ सामाजिक विषयन पर व्यावहारिक आ स्तरीय सामग्री खूब लउके लागल बा। भोजपुरी में साहित्य का हर विधा में लिखला का सङहीं सहज रूप में वाद-विवाद भी लउके लागल बा। व्याकरण आ भाषा विज्ञान से लोक तक के धराऊँ परतोख दियाए लागल बा। समर्थन आ विरोध भी खुलिके होखे लागल बा। कवनो भाषा का विकास के एहसे नीमन लक्ष्य का हो सकऽता ?

साहित्य का अलावे अन्य व्यावहारिक संदर्भन पर भी कुछ ई पत्रिकन में लिखाए लागल बा। उमेदि कइल जाए के चाहीं कि जल्दिए एह तरह के पत्रिका मुद्रित रूप में भी लउकिहें सन। उत्साही लोगन के कमी नइखे। जब भोजपुरिहा जवान एकरा के चुनौती का रूप में ले लीहें त फेरु उनकर कहीं जबाब ना मिली आ तब सही मायने में 'सँझवत' जइसन पत्रिकन के कवनो खास जरूरत ना रहि जाई। जरूरी बा भोजपुरी पत्रकारिता में व्यावसायिक पत्रिकन के प्रकाशन।

अब त जमिके भाषिक आ समाजशास्त्रीय विवेचना वाली बहस भी चल रहल बाड़ी सन। ई संकेत भोजपुरी का बगबगात भविष्य खातिर आशाजनक बा।

इहाँका विप्र जी के नाती हईं

अंक-4 'विप्र विशेषांक' रहे। हमरा 'मिश्र' भइला का चलते कई वरिष्ठ साहित्यकार लोग कल्पना क लिहले कि हम विप्र जी के नाती हईं, एहीसे उहाँ पर विशेषांक निकाल रहल बानी। कुछ लोग त साधिकार एह कल्पित सत्य के अपना संवाद के मुख्य विषय बनवले। हमरा पहिल बेर अइसना तथाकथित भोजपुरी

साहित्यकार लोगन का एह सामाजिक दर्शन आ सांदर्भिक लेखन के पता चलल। नीक ना लागल। एहसे हटिके भी बहुत कुछ सोचे खातिर बाटे। हम स्पष्ट कइल चाहबि कि विप्र जी से हमार संबंध खाली लेखकीय रहे। हम एकर चर्चा संपादकीय में भी कर चुकल बानी। विप्र जी जइसन साहित्यकार के गिनती नींव के पत्थर का रूप में होई। सत्य त ईहो बा कि हम उहें का प्रेरणा से भोजपुरी लेखन में प्रवृत्त भइलीं। भोजपुरी के ऊँचाई पर ले जाएके बा त आपन तनी सोचो बदलल जाउ।

लेखन जरूरी बा

ई बहुत नीमन बात बा कि बिना लाग-लपेट के प्रतिक्रिया आ रहल बिया। हम पहिलहूँ निवेदन कइले रहीं कि मुँहदेखउअल से बाँचल जाउ। बाकिर, तब का कइल जाउ, जब कवनो खास विधा में छापे खातिर सामग्री के अकाल परे लागे ? तब त दउरी में जवन खोंटल साग आइल होई, ओही में से नू बीछे-बीने के परी ? ई बड़हन समस्या बा। जिम्मेदार लोग जो एकरा के अनदेखा करिहें त निश्चित रूप से भोजपुरी के नुकसान पहुँचइहें। एहसे लिखल आ लिखवावल दूनो जरूरी बा। पत्रिका खातिर स्तरीय सामग्री भेंजल आ भेंजवावल जाएके चाहीं।

मुफ्त अंक भेजला के त्रासदी

पति बेरि नियन एहू पारी पचासों लेखक लोगन के रजिस्टर्ड डाक से पत्रिका भेजल गइल। 40 से अधिक लेखक लोगन के हाथ से दिहल गइल। पोस्ट आफिस से डिलिवरी रिपोर्ट बहुत पहिलहीं आ चुकल रहे, बाकिर खाली छह आदमी एकर सूचना दिहले। भोजपुरी लेखक लोगन के ई अतिव्यस्त स्थिति हटे कि उदासीन स्थिति - भगवाने जानसु। एहिजा हम भोजपुरी का वर्तमान स्थिति से अपने सभ के परिचित करावल चाहतानी, एकरा से पत्रिका के संपादक का काम पर कवनो असर नइखे परल- एकर बिसवास कइल जा सकता। बस काम करे के ढंग में परिवर्तन जरूरी हो गइल बा।

एही से ई निर्णय लेबे के परल हा कि 'अब से पत्रिका के लेखकीय प्रति ना भेंजल जाई।' जेकरा चाहीं, ऊ ओकर कीमत मनीआर्डर कऽके मङा सकता। एकर मतलब ई नइखे कि केहूँ के पत्रिका भेंजले ना जाई। ई प्रकाशक का विवेक पर निर्भर रही कि कहाँ-कहाँ भेंजल जाई। हमरा बुझाता कि एही में भोजपुरी के कल्यान बा। ‘सिहुर-सिहुर’ आ ‘आछो-आछो’- दूनो भोजपुरी का सेहत खातिर खतरनाक बा। वर्तमान स्थिति में बदलाव का बाद प्रबंध नीति में बदलाव कइल जा सकता।

लेखक लोगन से निहोरा

कई गो रचनन का संपादन में टाइप कइला से अधिका समय लागल बा आ तबो समयाभाव का कारन अपना काम प संतोष नइखे।

एकरा पीछे मुख्य कारन बा- ' ' , " " , - , ... , ! आदि विराम चिन्हन के अतिवादी आ मनमानी प्रयोग आ वर्तनी में अशुद्धि।

एहसे सम्मान्य लेखक लोगन से निहोरा बा कि

1. विराम चिन्हन के प्रयोग करत खा ज्यादा स्पष्टता खातिर गैप (अंतराल) जनि दिहल जाउ आ अतिरेक से बाँचल जाउ।

2. अलग-अलग क्षेत्र में शब्दन के रूप अलग हो सकऽता आ ऊ अपना मूल रूप में स्वीकार्य बा बाकिर ओकरा वर्तनी में मनमानी कइसे चली ? नया रचनाकारन के भाषा आ साहित्य का जानकार लोगन से संपर्क कइके अपना वर्तनी के सुधार खातिर सक्रिय रहेके चाहीं। कवनो-कवनो रचना का वर्तनी में ढेर संशोधन करत खा मूल रचना का टंकण से अधिक समय लागि जाता। एहसे केहूँ के मन उबियाइ जाई। अइसना लेखक लोगन खातिर सलाह बा कि पहिले हिंदी में खूब लिखिके आपन वर्तनी सुधारि लीं, एकरा बादे भोजपुरी में लिखीं। भोजपुरी लेखन के लाइटली जनि लीं।

3. हिंदी आ संस्कृत का शब्द के प्रयोग करत खा मानक वर्तनी के ध्यान राखल जाउ। चंद्रविंदु का जगहा अनुस्वार के प्रयोग जनि कइल जाउ। पत्रिका मानक वर्तनी के पक्षपाती बिया। एहसे अब से एकर पुरजोर कोशिश होई। रउआँ सभ का बिना सहजोग के ई लक्ष्य हासिल ना हो पाई। बिसवास बा, पत्रिका के रउआँ सभ के आशीर्वाद जरूर मिली।

प्रस्ताव

1. **'उनुकर/उनकर' आउर 'उनुका/उनका' का प्रयोग के सावधानी**

'उनुकर/उनकर' सार्वनामिक विशेषण का बाद कवनो संज्ञा के खाली 'ने' परसर्ग विहीन कर्ता कारक के रूप रही। बाकिर, 'उनुका/उनका' का सङे अइसन बाध्यता नइखे। नीचे लिखल उदाहरण से ई स्पष्ट हो जाई-

उनुकर स्वास्थ्य ठीक बा। उनकर दिन अब गइल। उनुका घर में केहूँ आइल बा। उनुका पँजरे से त आवतानी।

2. नासिक्य ध्वनि वाला शब्दन के अनुनासिक बनावत खा हिंदी के अनुकरण कइल

जाएके चाहीं आ जहाँ हिंदी में ऊ शब्द ना होखे त ओकरा के अनुनासिक रूप देबे से बाँचे के चाहीं काहेंकि अनुनासिक ध्वनि त अइसहीं नासिक्य ध्वनि में पचि जाई, ऊ बुझाई कइसे ?

3. हिंदी वर्तनी में जवन प्रयोग में बा, ओकरा के जरूर जोगाके राखल जाउ।

4. भोजपुरी में 'के' संबंध का सङ्हीं कर्म कारक के भी चिन्ह (चिह्न) हटे। एहसे प्रयोग करत खा एकर सावधानी जरूरी बा। जो एके वाक्य में दूनो कबो एकही सङे आइल होखे त हमार सुझाव बा कि संबंध कारक खातिर 'के' का बदला 'का' के प्रयोग कइल जाउ। एहसे स्पष्टता बनल रही।

5. भोजपुरी में बोलल जाला- 'चिन्ह' आ हिंदी में एकर वर्तनी बा- 'चिह्न'। 'चिह्न' रखला प भोजपुरी का स्वभाव से छेड़छाड़ होई आ 'चिन्ह' के मानक रूप दिहला पर नवकी पीढ़ी कंफ्यूजन के शिकार होई। एहमें बहुत सावधानी के जरूरत बा। हम अभी तक कवनो निर्णय पर नइखीं पहुँचल कि संबंधित कवनो प्रस्ताव राखि सकीं। भाषा के विद्वान आ अनुभवी साहित्यकार लोगन से निहोरा बा कि अपना विमर्श से हमरा के निर्द्वंद्व होखे में मदद कइल जाउ।

6. भिन्न-भिन्न भोजपुरी क्षेत्रन के शब्द आ पद

हमनी देने, हमरा देने, हमरा ओरि जइसन अलग-अलग क्षेत्र में बोलल जाएवाला पदन के प्रयोग सहज आ आसान लागे त अपना लेखन आदि का भाषा में जरूर अपनावे के चाहीं। एह प्रयत्न से भोजपुरी के डेग स्वतः मानकीकरण का ओर बढ़े लागी।

गैरभोजपुरी क्षेत्र के लोकप्रिय आ आसानी से ग्राह्य शब्द

नालंदा, गया, जहानाबाद, औरंगाबाद जइसन मगही क्षेत्र में बोले जाएवाली 'कउँची' 'कौन चीज' के लाघव रूप हटे, बाकिर ओकरा से सटल क्षेत्रन में ई खूब प्रयोग में बा। कमो संपर्क में आइल लोग 'कउँची' से प्रभावित हो जाले आ ओकरा प्रयोग में खुशी महसूस करेले। भोजपुरी में एह तरह का शब्दन के आगम आ ग्रहण नीक रही।

हमार निहोरा बा कि कम से कम हमरा 'प्रस्ताव' पर जरूर टिप्पणी दिहल जाउ आ कुछ रुचत ना होखे त ओकरा पर त आपन व्याकरण भा लोकसम्मत टिप्पणी जरूर दिहल जाउ।

भोजपुरी भाषा, साहित्य आ संस्कृति का बढ़ंती खातिर आस लगवले शुभकामना करत,

रामरक्षा मिश्र विमल

रघुवीर नारायण

- राजीव उपाध्याय

सुंदर सुभूमि भैया भारत के देसवा से,
मोरा प्रान बसे हिमखोह रे बटोहिया।
एक द्वार घेरे रामा, हिम कोतवालवा से,
तीन द्वारे सिंधु घहरावे रे बटोहिया।
जाहु जाहु भइया रे बटोही हिंद देखि आउ
जहवाँ कुहँकि कोइली गावे रे बटोहिया।

ई 'बटोहिया' गीत के लाइन हवी सऽ। ई ऊ गीत हऽ जेवन आजादी के लड़ाई के घरी ना खाली उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखण्ड, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश अउरी बंगाल को लोगन के जुबान पऽ बंकिमचंद चटर्जी के रचल 'वन्दे मातरम' नियर चढ़ि गइल रहे बलुक एकर कीर्ति त्रिनिदाद, टोबैगो, गुयाना, सूरीनाम, मारीशस अउरी फिजी ले चहुँप गइल रहे। अपना समय में एह गीत के ऊ ऊँचाई मिलल रहे कि मनोरंजन प्रसाद सिन्हा नियर बड़हन रचनाकार एह गीत से प्रभावित होके 'फिरंगिया' गीत के रचना कइनी। बाकिर आजादी मिलला का बाद लोगन के मिजाज बदलि गइल अउरी भिखारी ठाकुर का 'बिदेसिया' के आगे एकर रंग उतरे लागल अउरी आज लोग एके बिसरा देले बा। अउरी जब लोग रचना के बिसरा देले बा त देशप्रेम के उदात्त भाव से भरल एह गीत के रचयिता रघुवीर नारायण केतना लोग के इयाद होइहें ?

प्रारंभिक जीवन

रघुवीर नारायण के जनम बिहार के सारन जिला (अब छपरा) छपरा शहर के दहियावाँ गाँव में 20 अक्टूबर सन 1884 ई. के बिइफे दिन के आधी रात के एगो संभ्रांत कायस्थ परिवार में भइल रहे। इहाँ के पिताजी के नाँव जयदेव नारायण रहे। इहाँ के पिता जी जयदेव नारायण अपना समय के छपरा के एगो प्रसिद्ध वकील रहलें। रघुवीर नारायण के आत्मपरिचय के हिसाब से जयदेव नारायण ओह समय के छपरा के वकीलन में अंग्रेजी बोले वाला पहिला वकील रहलें। आचार्य महेन्द्र शास्त्री के संपादन में निकले वाली 'भोजपुरी' पत्रिका के पहिला अंक में रघुवीर नारायण आपन आत्मपरिचय देले बानी - "हमार जन्म 30 अक्टूबर सन्

1884 ई में बीफे के रोज आधा रात के छपरा शहर के मुहल्ला दहियावाँ के अपना मकान में भइल।...हमार बाबू जी के वकालत अपना समय में बहुत जबरजस्त रहे।" छपरा के वकीलन के बीच में सबसे पहिला वकील अंग्रेजी जानेवाला ऊहे रहस। एह से उनकर नाम खिलल रहे। उनकर नाम जयदेव नारायण रहे। रघुवीर नारायण के तीन गो भाई रहलें। इनकर बड़ भाई के नाँव राय बहादुर सुखदेव नारायण रहल। ऊ ब्रिटिश सरकार में डिप्युटी कलक्टर रहलन जिनकर देहावसान सन 1939 ई में हो गइल।

शिक्षा-दीक्षा

इहाँ के प्रारंभिक शिक्षा-दीक्षा छपरा के पारंपरिक विद्यालयन से भइल। बाकिर परिवार का माहौल में अंग्रेजी भाखा के बोलबाला रहे एसे उनकी परवरिश में अंग्रेजी के असर बहुत रहल अउरी शिक्षा-दीक्षा में आगे चलि के अंग्रेजी के बरियार जोगदान रहल। विद्यालय शिक्षा छपरा से पूरा कइला का बाद रघुवीर नारायण अंग्रेजी (प्रतिष्ठा) में पटना कॉलेज से स्नातक कइलें। पटना कॉलेज में पढ़त घरी रघुवीर नारायण से डॉ. राजेन्द्र प्रसाद से परिचय भइल। "समौरिया भइला के कारन ई परिचय बाद में मित्रता में बदलि गइल।

जीवन-यापन

रघुवीर नारायण जी के जनम एगो धनी परिवार में भइल रहे। एह कारन उनकरा मन के रोजी-रोटी के चिन्ता कबो ना सतवलस। साहित्य में रम गइला के कारन शुरुआती समय में त कुछ घर-बाहर के छिटपुट काम करत रहलन बाकिर कुछ समय गुजरला के बाद बनैली के राजा कीर्त्यानंद सिंह के व्यक्तिगत सचिव के रूप में लमहर समय ले काम कइलें। राजा कीर्त्यानंद सिंह के साहित्य में बहुत रुचि रहल अउरी एह कारन रघुवीर बाबू के राजा से बहुत पटत रहे। अपनी सिफारिश से राजा कीर्त्यानंद से बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन का भवन के निरमान खाती राजा साहब से दस हजार रुपया के दान लिहलन।

शुरुआती जिनगी में रघुवीर नारायण जी अपनी पहिराव अउरी बाह्य आवरण के लेके बड़ा सतर्क रहल बानी। बाकिर बाद में सिर पऽ गोल टोपी, आँख में निक्कल के फ्रेम के बनल चश्मा उनकरी ऊँच लिलार प के बहुत नीक लागे, त देहिं पर अधिकतर धोती, कुरता आ बंद गला के सदरी त काज-परोज प धोती के जगह प चूड़ीदार पायजामा उहाँ के पसन रहे।

आखिरी समय

रघुवीर नारायण जी सन 1940 ई. ले राजा साहब से जुड़ल रहलन अउरी सांसारिक जीवन जियलन बाकिर सन 1940 ई. से एगो संन्यासी के जीवन जिए लगलन अउरी आखिरी समय के एगो संन्यासी के जीवन जिएलें। एक जनवरी सन 1955 ई. के छपरा में ई रचनाकार आपन देहिं त्यागि के आपन इहलोक के जतरा पूरा कइलें। रघुवीर नारायण जी के उनकी जिनगी में ऊ हर तरह के मान-सम्मान मिलल जेवना के अपेक्षा एगो रचनाकार राखेला। उहाँ के अनेकन राष्ट्रीय मंचन से सम्मानित कइल गइल। बिहार राष्ट्रभाषा परिषद उहाँ के साहित्य में जोगदान खाती सम्मानित कइलस।

साहित्य साधना अउरी रचना संसार

रघुवीर नारायण मूलतः अंग्रेजी अउरी हिंदी में आपन साहित्य रचना कइले बानी बाकिर भोजपुरी में रचल 'बटोहिया जइसन अमर रचना उहाँ के पहिचान बनि गइल। रघुवीर नारायण के पारिवारिक माहौल में अंग्रेजी के बोलबाला रहे अउरी एह कारन उनका ऊपर अंग्रेजी के बहुत असर रहे।

साहित्य के रचना तऽ ऊ छोट उमिर में शुरू कऽ दिहले रहलन बाकिर उनकर साहित्य के मूल भाखा अंग्रेजी रहल। अंग्रेजी में लिखल शुरू कइला के बाद जब हिन्दी अउरी देवनागरी के प्रचार-प्रसार राष्ट्रीय आन्दोलन के संदर्भ में होखे लागल तऽ रघुवीर नारायण हिन्दी साहित्य सिरिजन करे शुरू क दिहनी। भोजपुरी में उहाँ के रचना करे के केवनो बिचार ना रहे बाकिर कहल जाला कि राजेन्द्र प्रसाद जी का निवेदन के बाद उहाँ के आग्रह प भोजपुरी के कविता लिखे शुरू कइलें।

रघुवीर नारायण विद्यालय जीवन से हिन्दी अउरी अंग्रेजी में तुकबन्दी करे शुरू कऽ देले रहलन अउरी एगारह (ग्यारह) बरिस के उमिर ले आवत-आवत ऊ साहित्य के लेके गंभीर होखे शुरू हो गइल रहलन। पं. अम्बिका दत्त व्यास उनकर साहित्यिक गुरू रहलन जे उनके साहित्य सिरिजन के लेके बढ़ावा देस। पटना कॉलेज में पढ़े के घरी प्रो. जेम्स उनका अंग्रेजी काव्य प्रतिभा के माँजे के काम कइलें। उनकर अंग्रेजी के शुरुआती रचना 'कलकत्ता इंस्टीट्यूट मैगजीन' अउरी 'यंग बिहार' आदि में छपल।

सन 1905 ई. में रघुवीर बाबू अंग्रेजी में 'ए टेल ऑफ बिहार' नाँव के एगो कविता के रचना कइनी। जब एह रचना के इंग्लैंड के राष्ट्रकवि अल्फ्रेड ऑस्टीन पढ़लन त ऊ एह रचना से बहुत प्रभावित भइलें अउरी सन 1906

ई. में रघुवीर नारायण जी के पत्र लिखि के उनकर तुलना अंग्रेजी दोसर कवि करत बड़ाई कइलें। प्रो. विल्सन अउरी प्रो. वेनेगी उनकी काव्य प्रतिभा से बहुत प्रभावित रहल लो। रघुवीर नारायण एनी बेसेंट के लेखन से बहुत प्रभावित रहलें। एनी बेसेंट के किताब से प्रभावित होके 'फॉक टेल्स ऑफ बिहार' नाँव से गद्यात्मक ग्रन्थ के रचना कइलें।

अंग्रेजी में अपनी काव्य कला से प्रसिद्धि मिलल तऽ उनकर परिचित पं. रामावतार शर्मा अउरी शिवनन्दन सहाय उनका के हिन्दी में लिखे खाती प्रोत्साहित कइल लो। एह प्रोत्साहन से प्रभावित हो के रघुवीर नारायण हिन्दी में पद्य रचना करे लगलन अउरी उनकर रचना 'तरुण भारत', 'बिहार बन्धु', अउरी 'शिक्षा' आदि पत्र-पत्रिकन में छपे लागल। हिन्दी में लिखल 'भारत भवानी' कवित एतना प्रसिद्ध भइल कि सन 1921 ई के पटना कांग्रेस अधिवेशन में वंदे मातरम् के जगह पऽ 'भारत भवानी' गीत गावल गइल। एतने ना बलुक 'भारत भवानी' ओह समय में बिहार के क्रान्तिकारिन के विद्रोह गीत बनि गइल रहे।

'बटोहिया' अउरी 'भारत भवानी' जइसन बरियार गीत रघुवीर नारायण के पहिचान बाड़ी सऽ बाकिर उत्तर प्रदेश अउरी बिहार में 'संकीर्तन साहित्य' के शुरुआत करे के श्रेय उनकरे बा।आजादी के बाद पटना विश्वविद्यालय के हिन्दी के प्रोफेसर आचार्य नलिन विलोचन शर्मा रघुवीर नारायण के रचना के चर्चा अपनी किताब 'प्रोग्रेस ऑफ बिहार थ्रू द एजेज' में कऽ के रघुवीर नारायण जी के अकादमिक मूल्य स्थापित कइनी।

'बटोहिया' रघुवीर नारायण जी के एकमात्र भोजपुरी के रचना बा। 'भारत-भवानी' के सिवाय उहाँके हिंदी में चार गो काव्य ग्रन्थन- रघुवीर पत्र-पुष्प, रघुवीर रस-रंग, रघुवीर रस गंगा अउरी निकुंज कलाप के रचना कइले बानी। एह रचना के मूल भाव भक्ति अउरी आध्यात्मिक चेतना बा। हिन्दी के रंभा खंड काव्य अप्रकाशित बा। अंग्रेजी में उहाँका अनेकन फुटकर कविता के सिवाय एगो गद्य ग्रंथ लिखले बानी।

रघुवीर नारायण जी के रचना संसार में पाँच गो प्रकाशित अउरी एगो अप्रकाशित ग्रंथन के सिवाय हिंदी अउरी अंग्रेजी में अनेकन फुटकर कविता बाड़ी स। उहाँके रचना संसार निम्नलिखित बाटे-

बटोहिया

भारतभवानी

रघुवीरपत्र-पुष्प

रघुवीररसरंग

रघुवीररसगंगा

निकुंजकलाप

रंभा (खण्डकाव्य – अप्रकाशित)

ए टेल ऑफ बिहार

फॉक टेल्स ऑफ बिहार

भोजपुरी साहित्य में जोगदान अउरी बटोहिया

सन् 1857 ई. के पहिला क्रान्ति के असफल भइला के बाद जब आजादी के लेके लोगन का मन में निराशा के भाव जागे लागल रहे तब देशप्रेम के भाव से भरि के बहुत कवि देशप्रेम के कविता लिखे शुरू कऽ दिहल लो। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद रघुवीर नारायण समौरिया रहलें अउरी रघुवीर नारायण से काव्य-प्रतिभा से बहुत प्रभावित रहलें। राजेन्द्र प्रसाद के ई विश्वास रहे कि जदि रघुवीर नारायण भोजपुरी में लिखिहें तऽ बहुत बढिया लिखिहें (जेवन बाद में सही साबित भइल)। ए भाव से डॉ. राजेन्द्र बाबू रघुवीर नारायण से जनभाखा भोजपुरी में देशप्रेम के गीत लिखे निवेदन कइलें ताकि देशप्रेम के भाव जन -जन ले चहुँपावल आसान रहो। एह तरे सन 1911 ई. में बटोहिया के जनम भइल।

ई रचना के कीर्ति साल भर भीतर बांग्ला भाषाई कलकत्ता ले चहुँप गइल। सर यदुनाथ सरकार एह गीत के सुनला के बाद रघुवीर नारायण के लिखले बानी, “आई कैन नॉट थिंक ऑफ यू विदाउट रिमेम्बरिंग योर बटोहिया।” गाँधी जी जब एह गीत के अपनी बिहार प्रवास में सुननी तऽ उहाँ के कहनी, ‘अरे! ये तो भोजपुरी का वंदे मातरम् है।’ एह गीत से न खाली गाँधी जी, डॉ राजेन्द्र प्रसाद अउरी सर यदुनाथ सरकार प्रभावित भइल लो बलुक पं रामावतार शर्मा, पं ईश्वरी प्रसाद शर्मा, भवानी दयाल संयारी,डॉ उदय नारायण तिवारी अउरी आचार्य शिवपूजन सहाय एह गीत के मुक्त कंठ से प्रशंसा कइल लो। आचार्य शिवपूजन सहाय ‘लक्ष्मी’ पत्रिका के सन् 1916 के अंक में लिखले बानी, “बटोहिया कविता का प्रचार बिहार के घर-घर में है। शहर और देहात-गली के अनपढ़ लड़के इसे गली में गाते फिरते हैं, पढ़े-लिखों का कहना ही क्या है! यदि एक ही गीत लिखकर बाबू रघुवीर नारायण अपनी प्रतिभाशाली लेखनी को रख देते हैं तो भी उनका नाम अजर और अमर बना रहता।”

आचार्य शिवपूजन सहाय के भविष्यवाणी सही भइल। आज ‘बटोहिया’ गीत ना खाली बिहार बलुक भोजपुरी के पहिला राष्ट्रगीत के दरजा

राखेला। सन 1970 ई ले 'बटोहिया' बिहार बोर्ड के 10वीं अउरी 11वीं कक्षा के हिन्दी के पुस्तक के हिस्सा रहत रहे। ई गीत आजादी के आंदोलन का समय में उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश अउरी बंगाल से लगायत त्रिनिदाद, टोबैगो, गुयाना, सूरीनाम, मारीशस अउरी फिजी के लोगन के चढ़ि गइल रहे। एह 'बटोहिया' गीत अउरी एकर रचयिता के आजादी का लड़ाई में महता के ले के राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' के राय रहल, "बाबु रघुवीर नारायण बिहार में राष्ट्रीयता के आदिचारण और जागरण के अग्रदूत थे। पूर्वी भारत के हृदय में राष्ट्रीयता की जो भावना मचल रही थी, वह पहले पहल उन्ही के 'बटोहिया' नामक गीत में फूटी कि एक उसी गीत ने उन्हें अमर कवियों की श्रेणी में पहुँचा दिया।"

'बटोहिया' गीत भोजपुरी भाषी समाज के स्वतंत्रता आन्दोलन के जोड़े के बहुत बरियार काम कइल। एह गीत के प्रसिद्धि मिलला से प्रभावित हो के जाने केतने कवि 'बटोहिया' के तर्ज पऽ देशप्रेम के गीत लिखल लो। ओह लोगन में मनोरंजन प्रसाद सिन्हा नियर लोगो शामिल बा। एतने ना आजो 'बटोहिया' के तर्ज पऽ जाने केतने गीत लिखाता। बाकिर 'बटोहिया' भोजपुरी साहित्य आकाश में ध्रुवतारा नियर अटल बा।

आखिर में

अंग्रेजी के बोलबाला वाला माहौल में पैदा भइल अउरी भोजपुरी में लिखे के शुरुआत करेवाला रचनाकार भोजपुरी में 'बटोहिया' गीत के रचना कऽ के जनमानस में देशप्रेम के भाव जगा के रघुवीर नारायण जी एक ओर लोक के कवि बनि गइनी तऽ दूसरी ओर हिंदी के रचना 'भारत भवानी' से क्रान्तिकारिन के आवाज बनि गइनी अउरी अंग्रेजी में बहुत कम उमिर में अपना समय के सभसे बढ़िया रचनाकारन में स्थान बना लिहनी। तीनों भाखा में एह तरे स्थान बनावल अपने में हरान करे वाला बात बा। बाकिर उहाँ के बस एतने पऽ ना रुकनी बलुक उत्तर प्रदेश अउरी बिहार में 'संकीर्तन साहित्य' शुरू करे के कामो कइनी।

संदर्भ

1. डॉ कृष्णदेव उपाध्याय, 1957, भोजपुरी और उसका इतिहास, नवीन प्रेस, दिल्ली
2. डॉ कृष्णदेव उपाध्याय, 1960, भोजपुरी लोकसाहित्य का अध्ययन, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी,

पृष्ठ 95
3. डॉ कृष्णदेव उपाध्याय, 1960, भोजपुरी लोकसाहित्य का अध्ययन, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, पृष्ठ 95
4. ध्रुव कुमार, 2013, बिहार शताब्दी के 100 नायक, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली पृष्ठ 134-136
5. ध्रुव कुमार, 2013, बिहार शताब्दी के 100 नायक, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली पृष्ठ 134-136
6. मृत्युंजय कुमार त्रिपाठी, 2011, यह रघुवीर नारायण कौन है ?

संपादक, मैंना (ई पत्रिका), दिल्ली।

चलीं,
भोजपुरियो में
नेवता लिखल जाउ।

लघुकथा

बंद

डॉ. अरुणमोहन 'भारवि'

बंद ! बंद!! बंद !!! आज पूरा शहर बंद बा। रेक्सा बंद ! टेंपो बंद ! दुकान बंद ! आफिस बंद ! स्कूल बंद, कालेज बंद, बाजार बंद! बंद बंद ! आज बंद के हल्ला बा। दहशत बा। डर बा। कब का हो जाई ? कब कवनो अनहोनी हो जाई कहल मुश्किल बा। एगो बड़ बाहुबली नेता के हत्या हो गइल बा। उनकरे समर्थक एह हत्या के खिलाफ आज बंद बोलवले बाड़न। जगह-जगह सड़क के बाँस-बल्ला से जाम कइके यातायात के ठप क दिहल गइल बा । चौक-चौराहन पर टायर जरा के रास्ता के रोकि के आवाजाही ठप क दिहल गइल बा, जेसे सगरो धुआँ-धुआँ लउकता। एगो अधबूढ़ आदमी पसीना से तर-वतर राह रोके खतिर लगावल बाँस के फानत अस्पताल का ओर बढ़ल। एगो नवजान ओकरा के रोकत टोकलस- 'कहाँ जात बाड़ बाबा ? जानत नइख कि आज बंद बा। सउँसे शहर बन्द बा। आज सब कुछ बंद बा।
- ठीक बा बाबू ! हम गरीबन खातिर त आज सबकुछ बंदे बा। बाकिर नेता लोगन के नेतागिरी काहें नइखे बंद ? - कहत ऊ अधबूढ़ आगे बढ़ गइल।

संस्मरण

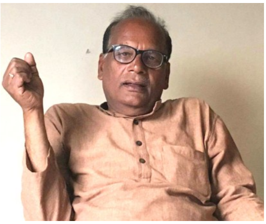

जेकर जीवन भोजपुरी पर नेवछावर रहे

डॉ. ब्रज भूषण मिश्र

जे आपन कमाई के पैसा लगा के अपना परिवार खातिर घर बनवलस, बाकिर ओह घर के ऊ नामकरण कइलस -'भोजपुरी भवन'। ई नामकरण भोजपुरी से प्रेम आ श्रद्धा के परिचायक बा। भोजपुरी खातिर ई प्रेम आ श्रद्धा कूट-कूट के भरल रहे स्व. अक्षयवर दीक्षित में। भोजपुरी के सेवा करेवाला लोग केतना तरह से भोजपुरी के सेवा करत रहल बाड़न। ढेर लोग लिख-पढ़ के भोजपुरी के बढ़ा रहल बाड़न। कुछ लोग आयोजन कर के बढ़ा रहल बा। कुछ लोग संस्था संगठन के जरिये। बाकिर कुछ लोग अइसनो बा जे एह तीनों क्षेत्र में भूमिका निबाह रहल बा। दीक्षित जी एही कोटि के बेकती रहीं, जेकर कलम त चलतहीं रहल, जे संस्थागत रूप मे काम त करतहीं रहीं, समय-समय पर आयोजन करके भोजपुरी के मान सम्मान बढ़ावत रहलीं। भोजपुरी के प्रति बोअल बिआ दीक्षित जी के उपजाऊ मन में 1947 ई. के आसेपास अँखुआए लागल रहे। पिछला सदी के पँचवा दशक में जनपदीय आंदोलन के अगुआ लोग- आचार्य महेन्द्र शास्त्री, पं. गणेश चौबे, कुलदीप नारायण राय 'झड़प' आ डॉ. परमेश्वरी लाल गुप्त के बीच में जवन भोजपुरी संस्था के गठन के विचार घुमरिआत रहे, ओह के मूर्त रूप देवे में युवा अक्षयवर दीक्षित के प्रस्ताव कामे आइल। सन् 1947 ई. में सीवान में हिन्दी साहित्य सम्मेलन का सङे भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के आयोजन भइल आ विधिवत भोजपुरी आंदोलन के शुरुआत हो गइल। दीक्षित जी आयोजन समिति में रहीं आ उहें के प्रस्ताव मंजूर भइला से ई काम संभव भइल। तब से लेके जिनिगी के आखिर तक दीक्षित जी

भोजपुरी का नीने सुतनी जगनी। सारन जिला भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, अखिल भारतीय भोजपुरी भाषा सम्मेलन, विश्व भोजपुरी सम्मेलन (देवरिया) के साथ अपने के जुड़ाव एह संस्थन के गठन के समय से रहल। सीवान शहर में दीक्षित जी के जिनगी कट गइल काहे से कि छात्र जीवन से लेके नौकरी ओतहीं कइलीं आ इलाका के कवनो साहित्यिक सांस्कृतिक आयोजन बिना रउरा लगले पूरा ना होखत रहे, आ उहो भोजपुरी के त कहहीं के का रहे। अथवला पर अपने बेटा के लगे गोरखपुर चल गइलीं आ ओतहूँ के साहित्यिक समाज में पुजाए लगलीं।

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के स्थापना के समय से दीक्षित जी के जुड़ाव रहल। एकर तिसरका अधिवेशन सीवान में करावे में अपने के महती भूमिका रहे। दीक्षित जी एह आयोजन के स्वागत मंत्री रहीं। अपने के सक्रियता के देखत कई बेर सम्मेलन के कार्यसमिति के सदस्य, प्रवर समिति के सदस्य, कई गो उप समिति के सदस्य बनावल गइल। अपने कार्य समिति में उपाध्यक्ष के कार्य निर्वहन भी कइलीं। सारन जब तीन जिला - सारन, सीवान, गोपालगंज में बँटा गइल त अपने तीनों जिला के हिंदी आ भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के सचिव, अध्यक्ष, महामंत्री, स्वागत मंत्री आदि पदन के सुशोभित कइनी। अपने रासबिहारी पांडेय जी के प्रयास से स्थापित अखिल भारतीय भोजपुरी भाषा सम्मेलन के रानीगंज, बंगाल अधिवेशन (1993 ई.) के अध्यक्षता कइलीं। जब 1996 ई. में विश्व भोजपुरी सम्मेलन के स्थापना भइल त अपने राष्ट्रीय इकाई के उपाध्यक्ष बननी आ 2006 ई. तक ओह पद पर रहनी। पटना में विश्व भोजपुरी सम्मेलन के राष्ट्रीय अधिवेशन करवावे में अपने के भूमिका महत्त्वपूर्ण रहे। एह निमित्त एगो बैठक माध्यमिक शिक्षक संघ भवन, पटना में आयोजित भइल रहे। अपने ओह में बिहार के सक्रिय साहित्यकार आ संगठनकर्ता लोग के जुटवले रहीं। हमहूँ ओह बैठक में शामिल भइल रहीं। अपने साहित्यिक संस्थन के तन-मन-धन-जन से सहयोग करत रहलीं ह। जीवे-जाङरे संगठन चलावे के काम करेवालन में रउरा अगिलकी पाँति में रहत रहलीं ह।

सांगठनिक योगदान त दीक्षित जी के बड़हन बड़ले रहल ह, लेखन आ संपादन के क्षेत्र में अपने के काम कम नइखे। संस्कृत, हिंदी, भोजपुरी में अपने

के लेखन चलत रहल। लगभग दस गो पुस्तक अपने के छपल बा आ लगभग आधा दर्जन पुस्तकन आ स्मृति ग्रंथन के संपादन अपने कइले बानी। हिन्दी,भोजपुरी आ कई शिक्षण संस्थान के अवसर-अवसर पर निकलेवाली स्मारिका के संपादन कार्य अपने करत रहल बानी। अपने भोजपुरी समकालीन आ भोजपुरी विश्व के सम्पादक मंडल में रहल बानी। हिंदी में अपने के लिखल ग्रंथ 'और कंपनी काँपती रही' आ 'भारतीय स्वातंत्र्य संग्राम का वीर नायक' अंगरेजन के विरोध में फतेह बहादुर शाही जइसन वीर नायक के चरित उजागर करेवाला ग्रंथ बा। इतिहासकारन, साहित्यकारन द्वारा जवना वीर योद्धा के अनदेखी कइल गइल, ओह के खोज निकाल के सोझा ले आवे के बड़हन काम अपने कइलीं। अपने के लिखल 'भोजपुरी सपूत' में भोजपुरी क्षेत्र के ओह उन्नायक लोग के जीवन परिचय दिहल गइल बा, जे भोजपुरी के सम्पन्न बनावे आ आगे बढ़ावे में अहम योगदान देलें बाड़ें। 'भोजपुरी महिला सेवी' अपने द्वारा अइसन संपादित ग्रंथ बा,जवना में भोजपुरी भाषा साहित्य के सेवा में लागल महिला लोग के चर्चा बा। दूनो पुस्तक संदर्भ ग्रंथ बा आ शोधार्थिअन खातिर सहायक बा। हम खुद एह पुस्तकन से सहायता लेत रहल बानी।

दीक्षित जी से हमार परिचय अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के प्लेटफार्म से भइल। मोतिहारी अधिवेशन में हम शरीक भइलीं आ ओतहीं से हमार परिचय पात भइल। सम्मेलन के महाधिवेशन में भेंट सोभाविक रहे। हम जेठ सरदार लोग के चीन्हे-जाने लागल रहीं। 1983 ई. में बिलासपुर अधिवेशन में हम एगो उपसमिति में आ गइलीं आ 1985 ई. में संगठन मंत्री बनावल गइलीं त हमरो पहचान बनल आ एगो साहित्य के सिपाही के रूप में लोग जाने बूझे लागल। एही क्रम में दीक्षित जी से परिचय पात बढ़ल। दीक्षित जी आपन पुस्तक हमरा के भेंट सरूप देहनी। 1987-88 ई. के बात होई एगो भोजपुरी प्रेमी विश्वनाथ सिंह जे मिथिला के क्षेत्र रोसड़ा में जनसंपर्क पदाधिकारी रहीं, भोजपुरी के एगो बड़हन आयोजन कइनी, जवना में सीवान, गोपालगंज, चंपारन, मुजफ्फरपुर के कवि साहित्यकार लोग के जुटान रहे। पटना से ब्रजकिशोर दूबे के लोकगीत गायन टीम रहे आ रहीं भोजपुरी नाटक ‘लोहा सिंह’ के रचयिता रामेश्वर सिंह काश्यप। एह कार्यक्रम में दीक्षितजी भी रहीं, हमहूँ रहीं। ओने से लवटे के क्रम में

काश्यप जी मुजफ्फरपुर में रुकल रहीं, दीक्षितजी रहीं, कविवर अनिरुद्ध रहीं। मुजफ्फरपुर में हम अपना आवास पर एगो गोष्ठी रखनी जेह में काश्यप जी, डॉ. रिपुसूदन श्रीवास्तव, अनिरुद्ध जी आ दीक्षित जी सम्मिलित भइलीं। कुमार विरल सहित कई गो स्थानीय लोग रहे।

कार्यक्रम के बाद दीक्षित जी आचार्य जानकीबल्लभ शास्त्री से मिले जाएके चाहत रहीं आ काश्यप जी हिंदी के प्रसिद्ध आलोचक प्रो. कामेश्वर सिंह शर्मा से। तय भइल कि पहिले दूनों आदमी के लेके हम शास्त्री जी के इहाँ जाइब आ फेर शर्मा जी के इहाँ। हम उहाँ सभे के ले के दूनों लोग के इहाँ गइलीं। विद्वद मंडली के बीच बड़ा मनसायन रहल। फेर ओह लोग के लेके रिपुसूदन बाबू के इहाँ। रात में एगारह बजे ले कवि गोष्ठी चलल। ई संपर्क हमरा के दीक्षित जी के अउर निकट ले गइल। उहाँ के भेंट सरूप आपन किताब 'भोजपुरी सपूत' हमरा के 1993 ई. में भेंट कइले रहीं। अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के मुबारकपुर अधिवेशन तक उहाँ के सक्रिय रहलीं। पांडेय कपिल से सैद्धांतिक मतभेद से दीक्षित जी अपना के अलगा कर लेलीं, तब तक विश्व भोजपुरी सम्मेलन स्थापित हो चुकल रहे आ ओकरा साथे उहाँका सक्रिय हो गइल रहीं आ 2006 ई. तक सक्रिय रहलीं। विश्व भोजपुरी सम्मेलन के पटना अधिवेशन में हम भाग लेवे ना गइल रहीं, बाकिर दीक्षित जी हमरा खातिर ओह अवसर पर निकलल स्मारिका 'सेतु' भेंट सरूप पं. गणेश चौबे जी के हाथ से भेंजलीं। उहाँ के नेह-छोह हमरा बरमहल मिलत रहल।

दीक्षित जी विद्वान आ साहित्यकार लोग के प्रति सरधा भाव राखत रहीं। अपना से छोट लोग के प्रति उहाँ के मन में नेह-छोह बनल रहत रहल। एही से दीक्षित जी के अनेकन संस्था द्वारा सम्मानित कइल जात रहल, अलंकृत कइल जात रहल। भोजपुरी के मान सम्मान बढ़े- एह खातिर ता जीवन बेयाकुल रहलीं। एगो कहावत प्रचलित बा - जूता सिआई से चंडी पाठ तक। ई कहावत भोजपुरी खातिर दीक्षित जी पर पूरा चरितार्थ होत बा। रघुनाथ शरण शुक्ल कुबोध लिखलहूँ बानी-

साहित्यिक कवनो उत्सव में,
जवना में शुभ जवन अपेक्षित
चउका पूरे से पूजा ले,
जहँवें देखीं तहँवें चिन्तित
नउआ से मांत्रिक ब्राह्मण ले,
सगरो जे तयनात सुसज्जित
उनकर नाँव अक्षयवर दीक्षित

अइसनका अक्षयवर दीक्षित के भुलावल ना जा सके। उहाँका भुलाइओ ना सकीं। उहाँके कीर्ति ध्वज फहराते रही। सरधा के फूल शब्दन में समर्पित करत हम उहाँका स्मरण के कोटिशः नमन करत बानी।

कार्टून साहित्य

भोजपुरी पंच....
पंकज तिवारी
ई के हऽ हो
हम त चले मनचली के संगे छोड़ि शहरिया रे
तऽ हमरेउ संगे बाटेन सुनि लऽ दुइ घुमवइया रे

कहानी

मास्टर साहेब

डॉ. जयकान्त सिंह 'जय'

सुबह के दस बजत रहे। कोरोना महामारी के चलते लोक डाउन में इस्कूल-कवलेज सब बंद रहे। जयकिसुन बाबू घरहीं रहलें। उनकर दूनो लरिका, जवन बाहर पढ़त रह स, उहो घरे आ गइल रहलें स। बाकिर ओकनी के एहू लोक डाउन में घरे रहके ऑनलाइन कलास करे के रहे से दूनो दू कमरा में लैपटॉप आ मोबाइल से ऑनलाइन पढ़ाई करत रहले स। जयकिसुन बाबू घरसेवक सुबोध के सेवा -टहल आ लगन से आश्वस्त भइला के बावजूद हर दिन के तरे एक सबेरे से अपना बानवे बरिस के बाबूजी मास्टर साहेब के देख-रेख कइला के बाद नहाने खातिर नहानघर में चल गइल रहस।

जयकिसुन बाबू, उनकर मेहरारू आ उनकर लरिका हमेसा मास्टर साहेब में फेरा-फेरी लागल रहेलें ताकि उनका ई ना बुझाव जे ई सब हमरा के सुबोधवा के हवाले करके निहचिंत हो गइल बाड़ें स। काहेकि हम जयकिसुन बाबू के कए बेर अपना मेहरारू आ लरिकन के ताकिद करत सुनले बानी - 'बुढ़-पुरनिया दवाई-बीरो, सेवा-टहल, देख-रेख आ मनमाफिक बात-बतकही के अभाव में अरदोआए अछइत मर जालें। बुढ़ारी में आदमी के सुभाव बच्चा वाला हो जाला। ओकरा कवनो दिसाईं ई ना महसूस होखे के चाहीं जे घर-परिवार के लोग नजरअंदाज कर रहल बा। एह से ऊ भीतर से टूट जाला। केहू से कुछ कही ना, आ भीतरे कुहुकत रही। फेर ऊ कए दिन जी पाई। एगो त सब कइला के बावजूद चार साल पहिले माई चल गइल। अब जइसे होखे अपना बल-बेंवत भर बाबूजी के जिआवे-जोगावे के बा। इहे सुख-सुविधा नू देख के अठारे साल से बड़ बेटा-पतोह ,गाँव-घर आ जिला-जवार तेआग के इहँवा रहत आइल लोग। जेकरा कवनो उपाय नइखे से घर-परिवार के नीमन-बेंजाय झेलके, हरुस-पातर सुन-सहके आ मन मारके दिन काटते नू बा, बाकिर कहँवा गाँव छोड़ पावऽता। एह लोग का एजवा घरे से ज्यादा सुख-सांति बुझाइल, तबे

नू हमरा-तोहरा के सेवा करेके मोका दिहल लोग। माई-बाप के सेवा करेके के मोका बड़ा भाग से मिलेला। एह से उनका एक-एक चीज खेयाल सभका राखेके बा।'

अइसे अबहीं मास्टरो साहेब अपना जरूरत के किरिया-करम अपने कर लेवेलें। घर के लोग खाली सावधान आ सतर्क रहेला जे कबहीं कुछ हो ना जाव। कहीं गिर-पड़ मत जास। काहेकि उहो ब्लडप्रेसर , सरभाइकल आ आउर केतना रोग के मरीज हउवें। छने ठीक आ छने बेठीक। रहल रहल रहेलें आ देखते-देखते हाहो-दइया लाग जाला। कए बेर त अस्पताल में भर्ती करावे के नवबत आ गइल। चार-चार पाँच-पाँच दिन आई.सी.यू. में रहके ठीक भइला के बाद घरे आइल बाड़ें। कए बेर त अइसनो हालत हो गइल कि लागल जे अबकी ना बचिहें। बाकिर आपन अरदोआए, डाक्टर के दवाई-बीरो आ परिवार के सेवा-भगत के चलते जम दुआर पर से लवट गइल बा। ठेहुंना जाम भइला के चलते गवें-गवें छड़ी आ एगो संघतिया के सहारे टहले जालें। बुढ़ारी में गिरहीं के भय ज्यादा रहेला। बुढ़ारी में हड्डी टूटेला त जुटेला ना। रीढ़ के हड्डिए टूटला के चलते त लाख इलाज आ सेवा-टहल के बादो जयकिसुन बाबू के मतारी चार साल पहिले चल बसली। एही से सबसे अधिका जयकिसुन बाबू आ उनकर मेहरारू अदकल रहेला लोग।

मास्टर साहेब अपनहूँ हर हाल में साढ़े चार से पाँच बजे ले जाग जालें। सुबोध बगले में सुतल रहेला। ऊ उनको से पहिले जाग के सबसे पहिले किरिया-करम से निपट के जोगासन आ नहान-धोआन कके तइयार हो जाला। मास्टर साहेब किरिया-करम आ कुला-कलाली के बाद छव बजे ले सोफा पर बइठ जालें। उनका बइठत होला कि जयकिसुन बाबू के मेहरारू दूगो ब्रिटेनिया कम्पनी के मेरी गोल्ड बिस्कुट, एक चम्मच पतंजलि के चमनप्रास आ एक गिलास सुसुम पानी लेके हाजिर हो जाली। जबले ऊ ई सब खइहें तले सुबोधवा चाय बनाके उनका आगे ध दी। चाय-बिस्कुट के बाद उनकर अखबार आ जाई आ ऊ ओकरा के जरूर उलट-पलट लिहें। फेर आठ बजत -बजत छोट-छोट लोइया के चार गो रोटी आ सब्जी आदि से जलखई कइला के बाद ऊ आराम करें लगिहें त जाके घर का लोग का कल पड़ी। काहेकि चाहे घर में आउर जे हो जाव, उनका रोटीन में अन्तर ना पड़े के चाहीं ना त किनहूँ के खैर ना होई। गुमसुम हो

जइहें। कहिहें कि भूखे नइखे। दवाइए ना खाएब। अब भइल मुस्किल। फेर उनका के मनावे में घर भर का नवो नतीजा हो जाई। उनकर हनक पहिलहीं वाला बा। गाँवे त कवनो काजे-परोजन होखे तबे अँगना में पैर देस, आ का मजाल जे उनका रहते केहू बेटी-पतोह दुरोखा के चउकठ लाँघ देस भा दुअरा झांक देस। इहँवो सब बा त का दामाद उतरलें आ चार चार जवान बच्चन के माई भइला के बादो जयकिसुन बाबू का मेहरारू का उनका सोझा नीचे पीढ़ो पर बइठल असक बुझाला। जहिया जरूरी काम से जयकिसुन बाबू का संगे बाजार जाली तहिया दिन भर सुमसुम भइल रहिहन। कवनो ना कवनो बात लेके घर भर पर कटकटात रहिहन।

एने जब से लाक डाउन भइल बा उनका टहले के रोटीन में बाधा खड़ा हो गइल बा। घर के लोग चाहे सुबोधवो टहलावे ले जाए से हिचकेला। तबो उनका जिद के चलते डेढ़-दू सव डेग टहलावहीं के पड़ेला। अइसन ना कइला पर तनिको पलखत पवलें कि छड़ी लेके गवें-गवें बहरिआ जइहें आ घर भर हलकान हो जाई। केहू के दउरावे के पड़ जाई। फिलहाल उनका के टहलावे में दिक्कत ई बा कि ऊ बाहर के लोग के रोक के ओकरा घर के आ ओकरा लरिका-फरिका के हाल-समाचार पूछे लागेलन अउर एह कोरोना काल में केहू बतिआवे के चाहे ना। सुबोधवो डेराइल रहेला कि के कहाँ से आ रहल बा ई केकरा मालूम बा? एह से ऊ हिचकेला, आ ऊ जबसे उनका के जाए से मना करेला तबसे ऊ ओकरा पर खफा रहेलें जे ई हमार बात नइखे मानत। ई हमरा पर मनमर्जी चला रहल बा। एह खीसे ऊ बाहर पंखा चला के बइठ जालें। सुबोधवा समझाई कि बाहर बहुत गर्मी बा। तबीयत खराब हो जाई त कहिहें कि हमरा बाहरे ठीक बुझाता। फेर ऊ हार-पाछ के उनका सामने हाल के भीतर बइठ जाई आ ऊ ओकरा पर चिढ़ल रहिहें। ई बात सुबोधवा जयकिसुन बाबू के बता चुकल बा। जयकिसुन बाबू जानेलें जे बाबूजी टएट मिजाज के आदमी हउवें। केहू के कबो डांट देलें। पुरनका मास्टर जे ठहरलें। मार-दबार के केतनो मनबढ़ू लरिका के आंवक-पटरी पर ले आके सुजोग बनावेवाला मास्टर साहेब। एह से ऊ सुबोधवा के सब बात पहिलहीं समुझा देले बाड़न।

आज जयकिसुन बाबू नहानघर में घुसले रहस कि सुबोधवा ऊपर आके उनका मेहरारू से कहलस -' बाबाजी बाहर बइठल बाड़ें। गरमी बहुत बा।

कहतानी भीतर आवे के त आवतो नइखन आ अब कहऽतारें जे जाके ऊपर से केहू के बोला ले आवऽ, हमार जीव हुलियाता।'

जयकिसुन बाबू के मेहरारू पहिले जयकिसुन बाबू के जोहली त ऊ नहानघर बन कके नहात रहलें। फेर बड़ बेटा के केंवाड़ी पीटऽली। बड़का बेटा बाहर निकल के हड़बड़ाइले पूछलस- ' का भइल ?

ऊ बोलली- तनी नीचे बाबा जी के देख त। कादो जीव हुलिआ तरहिन। ढ़ेर गर्मी बा चाहे गैसो हो सकेला। ब्लड प्रेशर नापे वाला मसीन ले ले चल। '

एतना कहत ऊ नीचे उतरे लगली आ पीछे पीछे बेटो मसीन ले ले नीचे पहुँचल। एतना में सुबोध मास्टर साहेब के समझा-बुझा के हाल में ले आके उनका बिछावन पर सुता देले रहे। जयकिसुन बाबू के मेहरारू आ उनकर बेटा मास्टर साहेब के लगे जाके एके संगे पूछल लोग - का भइल? कइसन बुझाता?

एह पर मास्टर साहेब खिसिअइलें- ' का भइल आ कइसन बुझाता? जीव हुलिआता। रहल रहल रहेलऽ लोगिन आ छने में कहँवा चल जालऽ लोगिन?'

जयकिसुन बाबू के बेटा उनकर पेट ढ़बढ़बाके देखलस आ मतारी के ऊपर से गैस के एगो गोली ले आवे के कहके ब्लड प्रेशर देखे लागल। ब्लड प्रेशर एकदम सामान्य रहे। गैस के दवाई दिआइल। कूलर के हवा चलत रहे। तुरते सामान्य हालत में आ गइलें मास्टर साहेब आ कहलें- 'अब ठीक बुझाता।'

एतने में जयकिसुन बाबू नहाके नीचे आ गइलें। सब बात जान-सुनके बोललें- 'गर्मी भा गैसो से ई भइल होई। कोरोना के भय से टहले में कमी होखे से अनाज पचत नइखे। एह से गैस हो सकेला। हमरो के त गैस हरान कर देले बा। एगो गैस के डब्लेट ना दे देलऽ ह लोगिन?'

एह पर उनकर मेहरारू बोलली- ' दिआइल ह तबे त आराम बा।'

एकरा बाद जयकिसुन बाबू मास्टर साहेब के बगल में बइठत माहौल बदले खातिर सुबोध से कहलें-' दूगो रोटी सेंकऽ तले हम इहाँ बानी।' बेटा के कहलें -'तूं जा आपन पढ़ाई देखऽ।' मेहरारूओ के ऊपर भेज के मास्टर साहेब से कुछ-कुछ बतिआवे लगलें। अइसे त मास्टर साहेब एकदम सामान्य हो गइल रहस। बाकिर उनकर आँखवा भींजल बुझाइल। बात बात में मास्टर साहेब रहीम कवि के एगो दोहा बोललें-

'रहिमन अँसुआ नैन धरी,
जीव दुख प्रगट करे।
जोको घर से काढ़िये,
क्यों न भेद कहि दे।।'

फेर ऊ एगो पुरान खिस्सा सुनावे लगलें- ' अपना गाँवे टोला पर अजब सिंह आ गजब सिंह दू भाई रहे लोग। अजब सिंह एगो बगल के गाँव का मठ के महंथ हो गइलें। मठ के पाले बहुते जमीन-जायदाद रहे। दू दू गो हाथी रहे। मान-सम्मान त रहले रहे। दू दू गो टहलुओ रहलें स। ऊ मठे का आमदनी से छोट भाई के इंजीनियर बना लिहलें। ओकर नीमन घर में बिआहो हो गइल। भाइयो भरत निकलल। उनकर बहुत देख-रेख करे। बाकिर बाहर नोकरी होखे का चलते ओकरा परिवार ले जाए के पड़ल। एह बीच मठ के दूनो टहलुआ चेला भाग परइलें स।

कुछ दिन त सब ठीक-ठाक चलल। बाकिर एकदिन महंथ अजब सिंह के लकवा मार दिहलस। उनकर आवाज लटपटाये लागल। दहिना अलंग बेकामिल हो गइल। इंजीनियर किहाँ खबर भइल आ ऊ छुट्टी लेके भागल अइलें। महंथ के देख-रेख करे खातिर एगो आदमी महीना पर राखल गइल। डाक्टर के दवा चले लागल। कुछ ठीक होखे के लच्छन बुझाइल त इंजीनियर देख-रेख करे खातिर रखाइल आदमी के सब बात समझा-बुझा के भाई के अनुमति लेके नोकरी पर लवट गइलें। अबहीं एको महिना ना भइल रहे कि लकवा के दूसरका अटैक के खबर पाके फेर इंजीनियर भागल-भागल अइलें। महंथ का बोलत बाड़ें, इंजीनियर सहित केहू का बुझाते ना रहे। देख-रेख खातिर रखाइल आदमी बोलल- ' रउरा सभे त देखते बानी कि हम दिन-रात लागल बानी। अपना जाने सेवा-टहल आ दर-दवाई में कबो लापरवाही ना करीं। बाकिर ना जाने इहां के का भइल बा जे केहू के देखते आउ आउ करे लागेलें। हमरो कुछ समुझ में ना आवे।'

इंजीनियर कए दिन रह के देखलें त ओकरा में कवनो कमी नजर ना आइल। इंजीनियर के सामने आवते महंथ आउर तेजी में आउ आउ करे लागस। बात बुझइबे ना करे।

एक दिन फेर अइसने भइल। महंथ के आँख से लोर गिरत रहे आ आउ आउ करत रहलें। इंजीनियर का बात समुझे में ना आवे। उनका मन में कए दिन से ई छव-पाँच होत रहे कि कुछ ना कुछ बात जरूर बा।आज ऊ कुछ सोच के देख-रेख करे खातिर रखाइल आदमी के समझाके बाजार जाए के बात कहके उहाँ से हट गइलें।

फेर देवाल के अलोता होके आहे लगलें। देख-सुन करे वाला आदमी जब आश्वस्त हो गइल कि इहाँ केहू नइखे त महंथ से बोलल- 'आउ आउ कके का कऽ लेलऽ ह। हई देखऽतारऽ नू लाठी। मुँहे में धाँस देव। ससुरु आजिज क देले बाड़। केहू कुछ ना करी। जेङ बाड़ऽ पड़ल रहऽ। हमरो के चैन से रहे द।'

इंजीनियर का सब बात बुझा गइल। फेर ओह आदमी के हटाके ठोक बजाके दोसर आदमी रखलें।' एतना कहके मास्टर साहेब एक-दू पल चुपा डालें आ फेर बोललें- ' ई खिस्सा हम अइसहीं इयाद आ गइल ह त कह देनी ह। गैर कतनो करी आदमी के ई इच्छा रहेला जे आपन एक आदमी हरदम पास में रहे।' एतना कहके मास्टर साहेब चूप हो गइलन। फेर कुछ छन तक जयकिसुन बाबू के गुमसुम देख के बोललें- ' बबुआ, जा, आ जाके एक कप चाय बना के ले आवऽ।'

जयकिसुन बाबू उठे के चाहते रहस कि सुबोध ट्रे में दू गिलास पानी आ दू कप चाय ले आइल। मास्टर साहेब पानी पीके चाय के कप उठावत सुबोध से बोललें- 'बबुआ, हई केंवड़िया ओठङा द। गरम हवा आ रहल बा।'

प्रताप भवन, महाराणा प्रताप नगर,
मार्ग सं. 1 सी, भिखनपुरा,
मुजफ्फरपुर-842001 (बिहार)

समीक्षा विशेषांक

सँझवत के अंक-8 **समीक्षा विशेषांक** रही।

- एकरा में प्रकाशनार्थ कवनो किताबि के अप्रकाशित समीक्षा किताबि का एगो प्रति का सङे भेजल जाउ। समीक्षक आपन एगो फोटो भी भेजीं।
- भोजपुरी समीक्षा पर शोधपूर्ण लेख भी आमंत्रित बा।
- लेखक लोगन से आग्रह बा कि संबंधित रचना पत्रिका का ई मेल पर भेजल जाउ।

sampadaksanjhavat@gmail.com
विषय (Subject) में लिखल जाउ - **समीक्षा विशेषांक खातिर**।

आपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना हिंदी यूनिकोड (मंगल फांट) में टाइप क के भा अपना मोबाइले से टाइप क के पत्रिका का ई मेल पर भेजल जाउ।
sampadaksanjhavat@gmail.com

हाथ से लिखल रचना भी भेजल जा सकता बाकिर ओकरा पर विचार होखे में कतना टाइम लागी, कहल नइखे जा सकत।
सॉफ्ट रचना से बँचला का बादे हार्ड कॉपी पर विचार होई। ई पत्रिका के मजबूरी बाटे। माफी चाहबि।
सीमा मिश्र
संपादक आ प्रकाशक

छठ मइया के परब आ एकर महातम

सौरभ पांडेय

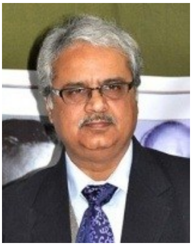

यजुर्वेद के चालीसवाँ अध्याय ईशावास्योपनिषद के रूप में जानल जाला जेकर पनरहवाँ श्लोक में सुरुज देव के महिमा बतावल गइल बा -

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्।
तत्त्वं पूषन् अपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये॥

हिरण्मयेन पात्रेण, माने, परम ग्यान के हिरण्मय पात्र, मने, खरा सोना के पात्र, के मुँह पिहित बा, झाँपल बा। माने जे, ब्रह्म (सत्य) के मुँह परखर ऊर्जा के महाभारी तेज से झँपाइल बा। तत्त्वं पूषन अपावृणु, माने, हे पूषन, हे सुरुज देव, आपन एह तेज के तनिका मद्धिम करऽ, बलुक हटावऽ, जेहसे हमनी (आम मनई) के चेतना के मूल सरूप के निकहा झलक मिल सके। कहे के माने ई बा, जे परमब्रह्म के ग्यान सुरुज देव के परखर मौजूदगी से मुनाइल बा, उनका तेज से हमनी अस आम मनई ओह ग्यान के लाभ अपना दैहिक आँखि से ना ले सकेला। एही खातिर पूषन- सउँसे मण्डल के पोसे वाला- माने सुरुज देव, से दूनो हाँथ, दसों अङुरी जोड़त निहोरा कइल गइल बा, जे हमनी आमजन ब्रह्मसत्य के जान आ बूझि सकीं जा, एह खातिर अपना तेज के भाव तनिका मद्धिम करसु। जवन परमात्मा ओजुगा बाड़े ओही के रूप त सभ प्रानी के भितरी विद्यमान बड़ुए। गहन धेयान धइले एकर समझ बन सकेला। सुरुज देव के तेज आ परखर-भाव के अइसने बखान आदित्य-हृदय स्तोत्र में बा, जेकरा बाँचत रामजी एक समै अपना मरुआइल मन के लगातारे थहरात गइला से बचवले रहले।

कहे के माने अतने बा, जे सुरुज आपन ऊर्जा आ अपना परखर रूप से जड़ आ चेतन के जियतार राखेले। आम मनई-समाज के मन में सुरुज के लेके जवन श्रद्धाभाव बा, ऊ सूर्योपासना के नाँवे दिठार होला। सुरुज धरतिये के ना अपना मण्डल के लहान से लहान कन से लेले महाकार खगोलीय पिण्ड तक के अपना तेज से चैतन्य राखेले। कहाला, जे सुरुज देव के पूजा के बिधिवत बिधान स्कंदपुरान में

उपलब्ध बा। एही देव के लेके आमजन के मन में बनल श्रद्धा आ कृतज्ञता के देसी आ भावमय उद्गार हऽ, अपना देस के हिरदै-प्रदेस, मने, भोजपुरिया इलाका के सभले पवित्तर, सभले प्रचलित आ सभले महती परब - ’छठ’ !

चइत आ कातिक, ई दू माह संक्रांतिकाल कहाले। एह समै धरती के ऋतुए ले ना, धरती के तापमान ले निकहा बदलाव के दौर से गुजरेला। एह समै, मने फागुन, चइत, कातिक आ अगहन माह में जवन परब-त्यौहार मनावल जाला, ओकर महातम आ ’दरअसल’ कारन में ’सभ प्रानी के देहि के ऊर्जा से संतुष्ट कइल’ मुख्य बा। छठ के महापरब चइत आ कातिक माह के सुकुलपच्छ के चतुर्थी से लेके सप्तमी के भोर ले मनावल जाला। एह परब में ब्रह्म के प्रतीक सुरुज देव आ प्रकृति के प्रतीक छठ मइया के पूजन पूरा नेम-धरम आ सरधा-अनुसासन से होला। जेकरा में पुरुषार्थ के चारों अवयव - धर्म, अर्थ, काम मोक्ष के सबल करे से लेके लोक-समाज अपना परिवार के अरदुआइ आ स्वास्थ्य के सरधा से ब्रती लोग गोहरावेला। रोजीना लउके वाला भोर के सुरुज देव जहवाँ अपना चढ़त तेज के कारन पुजाले, ओजुगे साँझि खा के डूबत सुरुज देव काम-ओजऽइला के भाव से, भा सिद्धिदाता के नाँव से पुजाले। मानव समुदाय के अखिल संसार में एगुड़ा ईहे परब, मने छठ परब बा, जेकरा पालन में चढ़त सुरुज के पूजे के पहिले कार्यसिद्धि आ दायित्व-निर्वहन के प्रतीक सँझवत के सुरुज देव के आगा सरधा से निहुरे आ मनभाव से उनका पूजे के बिधान बा। जीवन में आगत के लेके मन में उठल उछाह के भाव के समझल जा सकेला, बाकिर, विगत होत इकाई के लेके मन में सरधा भाव उठल, ओकरा सम्मान दिहल, एह परब के असल मरम हऽ। कवनो सनातनी परिवार के घर में रोजीना होत संझाबाती भा साँझपूजा बलुक डूबत सुरुज देव के लेके आमजन के मन में बनल सरधे जतावेला।

सुरुज देव के पूजा के मूल अस्थान

सुरुज देव के पूजा के मूल अस्थान मगध छेत्र के मानल जाला। बिहार राज्य के औरंगाबाद के लगे ’देव’ नाँव के कस्बा एह परब के मनवला के जुग-जुगंत से साक्षी रहल बा। लोक-मान्यता बा, जे एह मगह छेत्र के आम जन-समुदाय आ ज्योतिष-बैद लोग सुरुज देव के पूजन से दीर्घ-जीवन के भेद आ मूलमंत्र बहुत पहिलहीं जान चुकल रहले। सुरुज देव के महातम बतावत ई छठ परब एह छेत्र के लोगन

के ओही समुझ के लोकस्वीकृति हऽ। एही छेत्र के बड़हन भाग, मने एकर पुरुब ओर सटले, अंग प्रदेस (आजकाल बिहार राज्य के भागलपुर आ आसपास के जिला) के कर्ण के सूर्योपासना महाभारत काल के सभ ले प्रचलित कर्मकांड रहल बा।

छठ मइया प्रकृति प्रतीक आद्यशक्ति के छठवाँ भाग कहाली। आद्यशक्ति के एही भाग के पुरातने काल में सुरुज देव से जोड़ दियाइल। एह तरी, सुरुज देव के तेजबल आ आद्यशक्ति के लोकहितकारी भाव के जोड़त, चइत आ कातिक मास के सुकुल पच्छ के षष्ठी के एही आद्यशक्ति के सुरुज देव सङे पुजाई होखे लागल। लोक परंपरा सुरुज देव आ छठी मइया के भाई-बहिन मानेले। छठ मइया ममता आ वात्सल्य के देवी जानल जाली। नवजात लइका आ बच्चा-बच्ची के अरदुआइ आ स्वास्थ्य खातिर छठ मइया से ब्रती लोग असीस माङल करेले।

छठ पूजन के विधान

छठ के परब आमजन के परब हऽ। एह में केहू पंडित-पुरोहित के गुनगान भा बखान नइखे। ना कवनो पंडिताई के कुछऊ माने-मतलब बा। पूजन के क्रम में एकर परसादी मौसमी फल आ ओह घरी के फसल के पकवान से बनेला। ई कवना ओर इशारा क रहल बा ? समाज के एगो बड़हन समुदाय के एह इशारा के बूझे के जरूरत बा। एह परब में कर्ता के मन आ तन दूनो के अगूत सफाई के बहुते महातम बा। ब्रतधारी अपना के आम लोगन से अलगा क लेले जेहसे मन आ तन के शुद्धता उनका से सँपर सको।

छठ परब चइत भा कातिक के सुकुलपच्छ के चतुर्थी से आरम्भ होला। एह दिन के ’नहाय-खाय’ के नाँव से जानल जाला। ब्रती लोग एह दिने लौकी भा कदुआ के तरकारी आ रहर भा रहरी के दाल सङे भात खाले। पंचमी के बिना नून के भोजन कइल जाला। एह दिन के ’खड़ना’ कहल जाला। आ खाए में रसियाव होला। ई गुड़ से बनल खीर हऽ। एही रसियाव के गोंहूँ के आँटा से बनल आ शुद्ध घीउ में चुपड़ल रोटी सङे खइला के बिधान बा। आजु के पूजा बाद एही के परसादी बँटाला। खड़ने के साँझ से छठ मइया के उपास भा उपवास शुरू हो जाला। उपासे से छठ मइया के ब्रत के आरंभ हो जाला। षष्ठी के साँझ खा कवनो नदी, पोखर, तलाब में डूबत सुरुज देव के पूजा काँच-दूध के गीरत धार आ जल से कइल जाला। दूध के एह धार के ’अरघ दिहल’ कहाला। दोसरा दिने

सप्तमी के भोर में अइसहीं अरघ ऊगत सुरुज देव के दियाला। आ भोर के अरघ दियाते परब के समापन भइल मानल जाला, जवना के पूर्नाहुती परसादी से ब्रती आपन ब्रत तूर के करेले।

छठ मइया के खातिर परसादी के दउरा सजाला, जवना के ब्रती आ ब्रती के घर-बार के सदस्य लोग अपना माथ प उठाइ के अरघ के घाट प ले जाला। एह दउरा में गोहूँ से बनल खजूर, ठेकुआ, पूरी आ आउर सभ पकवान धराला। एही सङे फल में जट्टा-नरियर, केरा, कमला नेमू, संतरा, पानीफल-सिंघाड़ा, आउर सभ मौसमी फल, काँच हरदी, ओह ऋतुअन के आउर कोन-कंद आ फसल में ऊँख आदी बन्हाला। ई दउरवे छठी मइया के बान्ह-छान्ह हऽ। सप्तमी के भोर वाला अरघ दिया गइला के बाद दउरा के समान सभ परसादी के रूप में बाँटल जाला। धेयान से देखल जाव त दउरा में बन्हाइल सभ खाद्य-पदार्थ, फल, कोन-कंद आम मनई के सेहत के हिसाब से बड़ा जरूरी भइल करेला। कहे के माने, जे पंचमी के खड़ना के साँझ से लेके सप्तमी के भोर में अरघ दिहला ले ब्रती उपासे रहेले। दउरा के कौ जगहा 'डाला' कहल जाला। एही से छठ के कौ जगहा डाला-छठओ कहल जाला।

एह परब के बैग्यानिक तथ्य से मिलत लाभ आमजनओ के मिलो, एह खातिर पुरनिया लोग सभ बिध-बिधान के लोक-बेवहार से जोड़ दिहले, जेहसे ब्रती आ आम मनई बिना ढेर ना-नुकुर कइले, बिध-बिधान के मानत रहसु आ एह कारन सहजे मिलत परम लाभओ के भागीदार बनल रहसु। एह परब के लेके लोक-मान्यता सभ के मूल में ईहे भाव रहल बा। एही भाव के लोगन के मन में आउर पकठाए खातिर परब के लेके बिसेस गीत गवाला। एह परब के सभले प्रचलित गीत, 'केरवा जे फरेला घवद से, ओह प सूगा मेड़राइ/ मारऽबि हम सुगवा धेनुख से, आदित होहूँ ना सहाय ! एही लगले केरा के बाद नरियर भा आउर फल के नाँव लियात जाला। एगो दोसरो गीत बा जवन बहुत प्रसिद्ध बा, 'काँचहीं बाँस के बहँऽङिया, बहँङी लचकऽति जाय..'

छठ मइया के पूजन से ई बात त एकदम साफ बा, जे, अपना धरती के अकास के परखरतम खगोलीय इकाई सुरुज देव आ आद्यशक्ति के प्रकृति रूप छठ मइया के पूजन होला, जवना के बिधान के लिहाज से जाने-अनजाने ऋतु के संक्रान्तिकाल में शिशु-मृत्यु दर कम करे के उपाय भइल करेला। भारत के आमजन एक मूल रूप से गझिन

कर्मकांडी ना, बलुक प्रकृतिपूजक रहल बाड़े। छठ मइया के पूजा आ इनकर ब्रत एही तथ्य के सार्थक तर्क हऽ। दुख के बात बस अतने बा, जे छठ के परब प आज बजार के बड़ गहिर नजर बनल बा, जवना के लोक-बेवहार आ लोक-परंपरा से कवनो माने-मतलब ना भइल करे। डर ईहे बा, जे कतहीं एह निराला आ सात्विक परब के मूल बिसर जन जाव, आ परब के नाँव प खलसा देखावा आ ढोंग रहि जाव। ई परब भोजपुरिया समाज के आपन, खालिस जमीनी, परब हऽ, जवना में भोजपुरिया समाज के सभ मनइयन के एक सूत्र में बान्हे के जुगत आ तागद दूनो बा। आम भोजपुरिया-जन छठ परब के निहितार्थ के बूझत, गूनत, 'का सही, का गलत' प धेयान देत, सार्थक बेवहार करत रहो, ईहे छठ मइया से बिनती बा।

एम-2 / ए-17, एडीए कॉलोनी, नैनी,
प्रयागराज-211008 (उ.प्र.)

किताबि : एक नजर में

अन्हार के साँच
(भोजपुरी कहानी संग्रह)

लेखक
अतुल मोहन प्रसाद

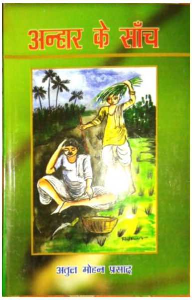

संस्करण : प्रथम, 2017
पृष्ठ : 104
मूल्य : दू सौ रुपया

प्रकाशक
अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन
A-204, साकेत प्लाजा, जमाल रोड, पो०-जमाल रोड, पटना-800001

गइनी खाये भोज
(हिन्दी-भोजपुरी व्यंग्य संग्रह)
लेखक
डॉ० ओमप्रकाश केसरी "पवननन्दन"

जनवरी 2021
पृष्ठ : 108

यूनिक प्रिंटर्स, बक्सर
(बिहार)

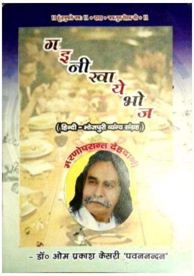

कब तक चली भोजपुरी का सङे दगाबाजी

श्यामबिहारी श्यामल

अखबारन में अक्सर दुनिया के कउनो न कउनो भाषा के खत्म होखे के बारे में समाचार रहेला। हाल ही एगो समाचार छपल बा कि मैक्सिको पर स्पेनिश-विजय के जे भाषा 'अयापनेको' गवाह रहे, उ विलुप्त होखे के कगार पर पहुँच गइल! काहें कि 'अयापनेको' भाषा के बोलनहार अब दुइये लोगिन बाँचल रह गइल बाड़े! ई सब देखके आपन भाषा के लेके भी दुःस्वप्न जइसन ना कउँध जाला?

साहित्य में भोजपुरी माटी के 'लाल' लोगिन के सूची बड़हने ना, बहुत गरिमापूर्ण भी बा। कबीर साहेब अउर बाबा रैदास से ई शुरू होई। भारतेन्दु बाबू से लेके अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, शिवपूजन सहाय, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, पं. परशुराम चतुर्वेदी अउर केदारनाथ मिश्र 'प्रभात' आदि तक पहुँच जाई! येकरा में पुरनकी पीढ़ी के आधा से अधिका हिन्दी के महान शिखर-नाम! संत कवि लोगिन के साहित्य त आपने अंदाज में बड़ले बा! त जे मानवता के राजदूत रहे, भाषा के मामिला में ओकरा पर सवाल उठावल ठीक नइखे। बाकिर, हमरा मन में कब्बो-कब्बो ई प्रश्न बड़ा संजीदगी से उठत-कउँधत रहेला कि जे महापुरुष लोगिन के कलम से हिन्दी के बुनियाद पड़ल, ऊ लोग काहें भोजपुरी से लगभग एकदमे परहेज कइल ?

महाकवि जयशंकर प्रसाद पर त हम दस बरिस ले काम करिके उपन्यास ''कंथा'' तैयार कइले बानीं, (जे अबहीं 'नवनीत' में धारावाहिक छप रहल बा, कुछ अंश हमार ब्लाग पर बा, मन होखे त देखीं सभे)। उपन्यास खातिर शोध के दौरान हमरा जे डिटेल मिलल ओकरा अनुसार प्रसाद जी हमेशा भोजपुरिये में बोलत रहीं। केहूँ के देखला पर उहाँ ओठ से सबसे पहिले इहे वाक्य फूटत रहे- '' ...का हो! ''। शीश से पाँव तक आपन घर-आङन के बोली-भाषा से रङल व्यक्तित्व। त, उहाँ के जइसन भोजपुरिया भी काहें आपन घर-आङन के जबान से कागज पर एकदम बेजार रहल ? येतना तटस्थ काहें ? ई लोगिन के अइसन का-कुछ बुझात रहे कि भोजपुरी में लिखला से हिन्दी के मार्ग कठिन हो जाई ?

हमार त ई कहनाम बा कि सोत के मजबूत कइला से कुंड समृद्ध होई! येमे केहूँ के कौनो संदेह ना होखे के चाहीं। सहायक नदियन के कमजोर कइल जाई त प्रमुख नदी के हालत बिगड़ी! भोजपुरी, अवधी, ब्रज, मैथिली अउर बैसवाड़ी जइसन बोली-भाषा मूल रूप में हिन्दी के सोते नू कहाई! ई सभन सोतन के मजबूत कइल जरूरी बा। इहे मजबूती से हिन्दी गंगा के धारा में अविरलता अउर मजबूती आई! केहूँ जदि साँचो उल्टा सोचत होखे अउर सोते के नदी के खिलाफ पेश करेके चाहे, त ई अदूरदर्शिता के अलावा कुछ अउर ना कहाई! ईहे भावना से हिन्दी के सेवा में जुटल हर रचनाकार के चाहीं कि घर-आङन के आपन भाषा के समृद्ध करे में भी अवश्य योगदान करे जे ओकर अंतस में फल्गु जइसन जीयतार बनल-बाँचल होखे!

ये घरी इहाँ हमरा बिहार के नालंदा के प्रोफेसर डॉ. स्वर्णकिरण जी के नाम इयाद पड़ रहल बा, जे बाड़न त मूल रूप से कहीं भोजपुरी-क्षेत्रे के बाकिर नालंदा यानी मगही-भाषा क्षेत्र में नोकरी करे पहुँचल रहन। उनुकर अद्भुत भूमिका देखीं कि हिन्दी के प्राध्यापक होखे के नाते ऊ हिन्दी में त कलम चलवहीं लगलन, भोजपुरी अउर मगही के साथ भी बराबर न्याय कइलन ! उनुकर कलम तीनों भाषा में खूब चलल बा। हिन्दी, भोजपुरी अउर मगही, तीनों के लेखकीय फलक पर उनुकर गणना होला। येतने नाहीं, उनुकर बेटा प्रोफेसर ईश्वरचंद्र भी अइसने निकललन। यानी कि स्वर्णकिरण जी भाषा के खुद त सेवक बनल रहलन, एगो सिपाहियो आउर दे दिहलन!

ई एगो उदाहरण बा कि आपन जिनगी से जुड़ल एकाधिक भाषा के प्रति हमार व्यवहार का होखे के चाहीं अउर इहो कि कइसे सबके दाय चुकावल जाला!

येकरे से इहो संदेश निकल रहल बा कि जेतना संभव हो अधिक से अधिक भाषन के आपन योगदान देवे के चाहीं। अखबारन में अक्सर दुनिया के कउनो न कउनो भाषा के खत्म होखे के बारे में समाचार रहेला। हाल ही एगो समाचार छपल बा कि मैक्सिको पर स्पेनिश-विजय के जे भाषा 'अयापनेको' गवाह रहे, उ विलुप्त होखे के कगार पर पहुँच गइल! काहें कि 'अयापनेको' भाषा के बोलनहार अब दुइये लोगिन बाँचल रह गइल बाड़े! ई सब देखके आपन भाषा के लेके भी दुःस्वप्न जइसन ना कउँध जाला ?

जहाँ तक भोजपुरी में हमार

न्यून लेखन-प्रयास के लेके राउर मन में सवाल उठत होई, त हम बताईं कि हमार मामिला एगो 'पर्सनल केस' जइसन बा। इहाँ ई कैफियत दे दीं कि हम आज से पचीस-तीस बरिस पहिले पलामू में रहीं। ओहिजे भोजपुरी में लिखल शुरू कइले रहीं। हमार प्रेरक रहन कृष्णानंद कृष्ण। भोजपुरी के नामी कथाकार। डाल्टेनगंज में रहन उहो। पीएचईडी में इंजीनियर। एगो लोकल साप्ताहिक अखबार रहे 'पलामू दर्शन', हम ओकर संपादक रहीं। कृष्ण जी घूमत-घामत कब्बो पहुँच जास। सांझि खानी त पक्का भेंट होखे। ओ घरी उनकर हिन्दी में एगो पत्रिका निकलत रहे 'पुनः'। कुछ अंक येकर बहुत चर्चित भइल रहे। जइसे, शायद 1982 में छपल 'लघुकथा विशेषांक'। कृष्ण जी कब्बो खड़ी हिन्दी ना बोलस। जब मुँह खोलिहें त आरा के ओरिजनल टोन-टनक के साथ ठसकदार ठनकत भोजपुरी! उनुकर कहानी संग्रह रहे ''रावन अबहीं मरल नइखे''। उनुके प्रभाव से हमहूँ भोजपुरी में लिखे लगनीं। कुछ छपलो रहे। उनुके संपर्क-सूत्र पकड़ के भोजपुरी के विख्यात उपन्यास ''फूलसुंघी'' जे महान गीतकार महेंद्र मिश्र के विडंबनापूर्ण जीवन-प्रसंग पर आधारित अद्भुत रचना बा, के लेखक पाण्डेय कपिल से पटना अउर एगो दोसर चर्चित भोजपुरी कथाकार वीरेंद्र पांडेय से छपरा पहुँच के भेंट कइले रहीं।

बड़ा निमन-निक माहौल मिलल-बनल रहे। बाकिर, का कहीं! रोटी के चक्कर सब पर भारी। पलामू से उनुकर तबादला हो गइल! हमहूँ बाबूजी के शांत भइला के बाद दैनिक 'आज' में नोकरी करे धनबाद चलि गइनीं। सब लेखन-गति गबड़ा गइल। उहाँ कुछ दिन बाद दैनिक 'आज' के बहाने लेखन फेनु शुरू त भइल, बाकिर अखबार हिन्दी के! बाद में फिर केहूँ अइसन संघतिया ना मिलल, जेकरा संपर्क-संघर्षण से भोजपुरी-लेखन पटरी पर लवट सके!

पटना के रचनाकार-साथी भगवती प्रसाद द्विवेदी, बलिया के साहित्यकार डॉ. राजेन्द्र भारती अउर खुद कृष्णानंद कृष्ण, जे रिटायर भइला के बाद ये घरी पटने में जमल बाड़न आदि के हिन्दी के संघे नियमित भोजपुरी-लेखन देख के आपन विवशता पर मन में हूक जइसन हमेशा उठत रहेला।

करीब दस बरिस पहिले बनारसो अइनीं त येहिजो मन के हिलकोर कब्बो कम ना भइल। येहिजा दूगो- एगो अइसन लोगिन से संपर्क त

भइल जे भोजपुरी-लेखन से जुड़ल रहन, बाकिर अब येकरा के हमार दुरभागे कहीं कि ईलोग बड़ा संकीर्ण सोच के निकल गइलन। हमरा संघे कुछ अइसन चाल शुरू हो गइल कि मन बड़ा आहत भइल! बात जहाँ के तहां फंसल रह गइल।

साहित्य के बारे में हमरा बुझाला कि ई अइसन आग हटे जे दु-चार संगी-संघतिया के बीच नियमित रगड़न-संघर्षण के बिना पैदा होखिये ना सके! बात से बात अउर विचार से विचार बनेला। जइसे सुवेटर बिनाला त फांस से फांस बनत निकलेला अउर बुनावट आगे बढ़त चलि जाले, लेखन के हिसाबो कुछ अइसने बा।

हमार गृहलक्ष्मी-सदनसरस्वती यानी जीवनसंगिनी सविता सिंह बिहार के आरे के बाड़ी अउर खुद भी नामी लेखिका। हमेशा खटाखट खाँटी भोजपुरी बोलेली, लेकिन उनुको लेखन अबहीं ले भोजपुरी में शुरू नइखे भइल। हमार आपन त इहे कहानी बा। हम अबहीं ले अपना लग्गे भोजपुरी लेखक समाजे तलाशत रहि गइनीं! रवाँ सब्भे कामना करीं कि हमार ई व्यक्तिगत डेडलॉक जल्दी टूटो, हमहूँ भोजपुरी में वृहद रचना लिखेके मंशा सहेजले-रखले बानीं !

जहाँ तक संविधान के आठवीं अनुसूची से भोजपुरी के अबहीं ले वंचित रखला के मामिला बा, येकर कारण राजनीतिक शिथिलता अउर विफलता त बड़ले बा, आपन समाज के लापरवाही भी कम छोट वजह नइखे। राजेन्द्र बाबू त आजादी के बाद देश के सबसे बड़का पद पर बइठले। खुद हमेशा भोजपुरिये में बोलतो-बतियावत रहन, बाकिर कहां कुछ फायदा भइल!

जयप्रकाश जी जब चहले तब दिल्ली के तख्तोताज तक उलट के रखि दिहले। ऊ चहिले रहितन त भोजपुरी के ई वाजिब हक बहुत पहिलहीं ना मिल गइल रहित? चंद्रशेखर जी प्रधानमंत्री-पद तक के शोभा बढ़वलन, बाकी का कहल जाव! सोचिके देखीं, आजो कौनि अइसन पार्टी बिया जेमें शीर्ष पर भोजपुरी माटी के उपजल लोग नइखे ! राजनाथ सिंह बाड़न, लालू प्रसाद बाड़न। सब एक से एक धाकड़ शख्स। जब चाह जवन मामिला के चाह जास, देश स्तर पर गूंजावे में देर ना लागी! बाकिर ई सब लोगिन पर एके जुमला लागू हो रहल बा- ‘बड़े मियाँ तो बड़े मियाँ, छोटे मियाँ सुभान अल्ला’! ई सब केहूँ के उहे हाल बा। खाली गाल बजाके रहि जाला लोग। एगो आरा के बेटी मीरा कुमार जी अइसन निकलली जे अबहिं ले कुछ वास्तविक संज्ञान लेले

बाड़ी। उनुके प्रयास से बीएचयू में भोजपुरी अध्ययन केंद्र के स्थापना भइल ह। एगो ठोस पहल। भाषा के अकादमिक उत्थान के दिशा में ई एगो बड़हन कदम बा। देश के सर्वश्रेष्ठ विश्वविद्यालय में रोज भोजपुरी के गूँज उठ रहल बा। अब जरूरी ई बा कि संविधान के आठवीं अनुसूची में शामिल करे के आपन मांग के हम जोरदार ढंग से सामने रखीं। भोजपुरी में बेहतरीन साहित्य के सृजन भी हो रहल बा लेकिन ओकर समुचित परचार नइखे हो पावत। भोजपुरी के नाम पर दुनिया के आगे अंट-शंट फिलिम अउर रद्दी गीत-गवनई के कैसेट, सीडी, डीवीडी फइलल रहता। ई मामिला में खाली गोस्साइला से कुछ होखे के नइखे। निमन से प्लानिंग होखे के चाहीं। येकरे हिसाब से कदम उठे त सफलता मिलल तय बा।

भोजपुरी के जब-जब चर्चा उठेला त हमरा आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के एगो कथन हमेशा इयाद पड़ेला। उहाँ के कउनो भोजपुरी सम्मेलन में पहुँचल रहीं। आपन उद्गार व्यक्त करे लगनीं त सविस्तार बतवलीं कि कइसे भोजपुरी के शब्द-संपदा अउर अभिव्यक्ति- क्षमता सबसे अधिका बा! अब जइसे हिन्दी में जे ई शब्द बा 'तुम', येकरा बोलला से का अइसन बुझाता कि ई संबोधन प्यार से हो रहल बा कि घृणा से? भोजपुरी में 'तुम' के अलगा-अलगा भाव-कोण के खातिर देख लीं कि केतना विकल्प बा! प्यार से कहीं त 'तूं', गोस्सा में बोलीं त 'तें', तनी सामान्य मन से बोले के होखे त 'तु'! एक शब्द के येतना विकल्प कउन भाषा में मिली! ...पुरनिया द्विवेदी जी मंच से अफसोस जतवले रहनी कि भोजपुरी में लेखन ना कइला के मलाल अइसन दुख बा जे उहाँ के सङे अब जिनगी भर रही!

भोजपुरी साहित्य के ख्यातिलब्ध साहित्यकार, जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद के पूर्व अध्यक्ष **जय बहादुर सिंह जी** अउर लोकप्रिय गायक **राधाकृष्ण यादव जी** का निधन से भोजपुरी परिवार मर्माहत बा।

शोकसंतप्त सँझवत परिवार का ओरि से सादर नमन आ विनम्र श्रद्धांजलि।

संस्मरण

हमार गाँव

तारकेश्वर राय 'तारक'

गाँव कहते दिमाग में कुछ छवि उभरेला आ याद आवेला ऊ समय जवन गाँव में बीतल, ऊ बुढ़िया बारी, पकवा इनार, माट साहब के छड़ी, आजी, बाबा, संगी साथी क दुलार आ बछरू अइसन ताजगी से भरल मन अनयासे याद आवे लागेला। हमार गाँव क नाँव ह सोनहरिया, नाँव सुनके मुँह जिन बिचुकाईं। रउआँ पसन पड़े त रउओं रख सकतानी, कबाला भा कॉपीराइट त बा ना। नाँव के अनुरूप हमार गाँव ना ह। ना त एहिजा कवनो सोने क नहरिया बिया ना त सोन नदी से कवनो दूर बा नजदीकी भवदी। त हमार गाँव ऊपी के गाजीपुर जिला में पड़ेला थाना जमनियाँ ह हमनीके। बाकिर हमार गाँव के नाँव सोनहरिया हमरा बड़ा मन भावेला। पोश परानी, फेड़-रुख, मूज-मुजवार, गोबर-गोथार, घर, सिवान, गड़ही, ताल, बन ई कुल्हिये हमरा जान से भी पियारा ह। गाँव से लागल नेह हमरा हियरा में हिलोर मारत रहेला। हमरा गाँव के चीझ सोनहरिया नाँव काहें धराइल हमरा नइखे मालुम आ हमरा बाबूजी के भी ना मालुम रहे, ई हम बिस्वास से कह सकतानी। अगर उहाँ के मालुम रहित त कबो ना कबो दुलरावत ठेठावत उनका मुँह से निकलि गइल रहित आ बाबा के नाँव के बारे में मालूमात रहे कि ना बता नइखी सकत। अगर उनको मालुम रहित त सरकत सरकत हमरा लगे जरूर चहुँप गइल रहित। एकरा में दू राय त हइये नइखे। सोना अइसन नाँव में छिपाव भा दुराव के सवाले नइखे ऊठत। परंपरा के अगली कड़ी हम जोड़े देले बानी। बुढ़ौती आ परंपरा क बड़ा बरियार आ पोढ़ नाता होला। परंपरा के निभावे में ई बूढ़ पुरनिया के बरियार साझीदारी देखे के भेटाला। परंपरा के ईहे लोग के कान्ह के आसरा रहेला। थाकल कमजोर कान्ह पर बइठला के कारण ई हमेशा डावाडोल ही लउकेले। जवान कान्ह प रहित त निकहा पोढ़ रहित। टाँठ भा टाङर होके परंपरा आगे की ओर घुसकित । बाकिर ,

जवान के कान्ह पर परंपरा के पहुँचे के कवनो उम्मीद हमरा त नइखे लऊकत। एहीसे जवनका परम्परा के जोगावे में कम, तूरे में ढेर बाझल लऊकता। जवानी आ बुढ़ौती बिचारो में आपन ठीहा बनावेला खाली उमिरिये में ई ना रहे।

जबले हम होश सम्हरनी तबले नाँव के अनुरूप हमरा गाँव में कवनो के दर्शन ना भइल, बिना सोना के नहर के भा सोन नदी के बिना कवनो लगाव के हमरा गाँव के नाम सोनहरिया रखा गइल, ऊ त नाँव के धरेवाला जाने। पीढ़ी दर पीढ़ी पुश्त दर पुश्त परम्परा के नाँव प हमनीके नाँव के ढोवतानी आ आगे आवेवाली पीढ़ी भी एके जरूर ढोई, एकर हमरा आसे ना पूरा बिसवास बा, बाकिर आज-काल पुरान शहर के नाँव के बदल के नावा नाँव रखल जा रहल बा।

सोना के नहर त छोड़ी अब त पनियो खातिर ईनर भगवान के मनौती करे के पड़ता। कोंखि-काँखि के बरखो होखत बा त सावने में धूर ऊड़ियाए लागता। एहीसे अपना खेती बारी खातिर बोरिंग के अलावा कवनो चारा नइखे लऊकत खेतिहर के आगे। नहर हमरा गाँवे त बा ना। सरग से पानी ना मिलल त आदमी पाताल के तोर के पानी निकाले खातिर मजबूर बा। समय से बरखा के ना भइला से बोरिंग के सहारा लेवे के पड़ता खेतिहर के, एकरा से खेती के लागत बढ़ जाता एकर तुलना में तैयार फसल के उचित मूल्य ना मिलला से खेती से दिनों दिन दुराव बढ़ि रहल बा नवका पीढ़ी के। भगवान सुनिते त ऊनकरा से काम भर पानी माङि लियाइत। ई प्रकृति के लीला देखीं पानी खातिर छछनत हमार गाँव बरसात के मौसम में पानी में डुबल ओकर नियति बन के रह गइल बा। कोसो दूर बहेवाली गंगा माई बरसात का दिन में ताल के मार्फत हमरा गाँव में आईके तांडव मचा देली। खेत बारी घर दुवार कुल्हिए डूबे क डर समा जाला सैकड़ो बीघा के जोत वाला खेत सालो भर पानी में बूड़ला खातिर कवनो फसल के काबिल ना रहेला। गाँव से पनही पहिनके बाहर निकलल दूभर हो जाला ऊ समय में।

अपनापन,मेलजोल,भाईचारा सिखावेवाला गाँव आज दरक रहल बा। साथे साथ दरक रहल बा परिवार आ समाज भी। बढ़त परिवार, कम होखत जमीन, नीक जिनिगी के सपना बढ़त बुनियादी जरूरत आ एकर अभाव गाँव से पलायन के एगो बरियार कारण बा। गाँव दिन प दिन खाँखर होखत चल

जाता। जवान कमाए खातिर युवा पढ़े हुनर सीखे खातिर आ बूढ़ पुरनिया बुनियादी इलाज का कमी के चलते गाँव छोड़े खातिर मजबूर बा। अब गाँव में रहेवाला मजबूरी में गाँव में रहता। अभाव खटक रहल बा। एकरा खातिर ऊ आपन गाँव के जिनिगी के दोष देता। भोजपुरी त हमनीके मादरी जुबान हिय माई भासा हिय। ई हमनी के घुटिये में पियावल गइल बा। लेकिन एके बोले में ढेर लोग के लाज लागता लेकिन अपवाद स्वरूप कुछ लोग जरूर बा जे एके शान से बोलता लिखता आ एके जोगावे खातिर प्रयासरत बा। एहीसे जइसे मौका मिलता गाँव से जुड़ल हर चीझ के ऊतार के फेंके खातिर ऊतावला बा चाहे ऊ भाषा होखे चाहे होखे खान पान, भेष भूषा, रीति रिवाज, शहर ओकरा के गँवार कहता आ ऊ गाँव से नजर चोरावता। ईहे दुविधा में भोजपुरिया समाज जिए के मजबूर बा। हरियाणा हमार कर्मभूमि ह जब हम इहाँ के गाँव देखींना त पाईंला कि इहाँ के लोग बड़ा शान से कहता कि हम गाँव में रहींला। ऊनका अपना बोली आ संस्कृति पर नाज बा। लोग सुखी सम्पन्न बा। यथार्थ आ कल्पना में कवनो अंतर नइखे। एही से संस्कृति फलत फूलत बिया, गाँव आबाद बा, गाँव के भाषा आबाद बिया, बोली आबाद बिया। संस्कृति लपकत चमकत मजिगर बढ़ंती प बा।

पुरनका गाँव जवन हमरा जेहन में बा ऊ देखावा से बड़ी दूर रहे। तबो कुछ लोग शहर में नौकरी करत रहे लेकिन ऊहो लोग प शहर कवनो खास प्रभाव ना डलले रहे। ऊहो लोग जब गाँवे आवे त ढले में ढेर टाइम ना लागे भोजपुरी के अलावा दोसर भाषा में बोलला बतियवला प बिदेशी क उपमा पावे। रेलगाड़ी हवाई जहाज प चढ़े के शौक तबो रहे लकिन गोड़ जमीन प राखे के शौक बीस पड़त रहे। हमरा याद नइखे दुवार प चारदीवारी रहे आ ओकरा में लोहा के गेट लागल होखे। ओहू समय गाय बैल खोला स लेकिन तबो दुवार खुला रहे। अब माटी के घर पक्का हो गइल चारू ओर से छरदीवाली दिया गइल लोहा के गेट लाग गइल। पहिले गाँव एगो घर रहे, अब घर एगो शहर हो गइल बा। एह बदलाव क नाँव बिकास धराइल। बिकास के नाँव प गाँव के जवन लेमनचूस देखावल गइल ऊ जहर के काम कइलस। गाँव के हावा में अपनापन वाला खुशबू ओरा गइल बा। लोग एक दोसरा से मिलले नइखे चाहत सामाजिकता दरक रहल बा। गाँव के पानी खराब हो गइल बा जनता ओरा गइल बा। खराब पानी

खातिर त आरो लाग गइल बा। लेकिन ओराइल पानी फिर गाँव प चढ़ी एकर उम्मीद कमे लउकता। गाँव ऊ नइखे रह गइल जवन हमनी के मानस में बा। आदमी जब गाँवे जाला त आँख सूखल आ दिल रोवत रहेला। तब के गाँव में लपेटाइल हमनी के देंहि आज के गाँव के बिखरत छिंटाइल ओरात देख बेचैन बा। सवाल जइसे तीना होखे के पूछता का गाँव बाँची ? एह सवाल से भागे के कोशिश जारी बा। जब आदमी आगे बढ़ेला त ऊ जरूर एक बार पाछे मुड़ के देखेला आ सोचेला कुछ गलती त नइखे होखत। जर से कटे के पीड़ा लेके ऊ पलायन करेला। मजिगर सवाल ई बा कि ऊ कट पावेला ? एकर जबाब खातिर हमनीके आपन मन के टटोरे के परी। शहर की ओर पराये के गाँव छोड़े खातिर आदमी के लगे कतनो बहाना होखे, मजबूरी होखे, लेकिन ई त मनहीं के परी कि हर भोजपुरिया के दिल में गाँव बसेला। ऊ देश में रहे भा बिदेश में जेहन के गाँव क इयाद के खाद पानी देत रहे, गाँव कबो ना मरी। देश दुनिया में केहू कहीं रही ओकर पहिचान ओकरा गाँव से होला। आदमी गाँव से त कट सकेला लेकिन एके अपना से अलग नइखे क सकत नाई त पहिचान पर संकठ आ जाई।

ई त खाली हमरे गाँव के राम कहानी नइखे, हर भोजपुरिया गाँव के कमोबेश ईहे कहानी बा। एकरा बादो हमार गाँव में हर बिरादरी के लोग बा खेती त मुख्य पेशा बड़ले बा लेकिन प्रायः हर घर के लोग कमाए खातिर बाहर बा, कमाइल पइसा गाँव के बिकास में भरपूर सहयोग करत लउकेला। बिकास क हवा से हमरो गाँव अछूता नइखे, सरकारी ईस्कूल के अलावा छोट मोट कई गो अंग्रेजी ईस्कूल बान स, माटी के घर आ पलानी तोर के पका के घर बन गइल बा भा बन रहल बा। गाँव के खोरी पक्की त बड़ले बाली स बिजली के अलावा सौर ऊर्जा के रौशनी से भी हमार गाँव रोशन रहेला। नवका त कीपैड के मोबाइल के बदलें इंटरनेट लागल स्मार्ट मोबाइल फोन में खुबूर खुबूर कुछ खोजते लउकेला, सेल्फी आ कान में लीड लगा के गाना सूने के बीमारी से हमार गाँव भी अछूता नइखे। स्मार्ट मोबाइल के अलावा करिया ऊजर टीवी के साथे साथ रंगीन टीवी भी गाँव के मनसाइन कइले रहेला। मर्दाना लोग के अलावा आधी आबादी के पसंदीदा चीज ह ई टीवी। डिश एंटीना भी गाँव के घर के छत्त प आम बात हो गइल बा। एकरा चलते

टीवी प चौबीसो घंटा प्रोग्राम चलते रहेला। एह डिजिटल युग से गाँव भी अछूता नइखे। फेसबुक, व्हाट्सअप, यूट्यूब जइसन चीज में बाझल लउकेला गाँव के युवा वर्ग। साइकिल क जगह मोटरसाइकिल आ चार चकवा गाड़ी भी सड़की प खूब दौरत लउकता। चरनी से पहिले बरध, एकरा बाद गाय भइँस बकरी भी बिला रहल बा। एकरा जगह ट्रेक्टर, हार्वेस्टर, थ्रेशर जइसन मशीन से खेती आसान हो गइल बा। महीनो के काम अब घंटो में निपट जाता गाँव में।

लाखो अभाव के बादो सामाजिकता जिंदा बा गाँव में। ई सामाजिकता कवनो बियाह ख़ुशी के समारोह भा दुःख तकलीफ में खूब लउकेला। हमरा गाँव में नाऊ क भूमिका निभावेला मुसलमान परिवार। पूजा पाठ भा कवनो हँसी-खुशी भा दुःख तकलीफ के समय होखे इनकर बढ़ चढ़ के हिस्सेदारी साफ लउकेला। पूजा पाठ में भी उपरोहित लोग के साथे साथ लागल रहेला ई लोग, कहीं भी आड़े ना आवेला गैर मजहब। कवनो तरफ के भेदभाव ना महसूस होखेला न मेहमान के ना मेजबान के। ई परंपरा हमरा गाँव में सदियों से चलल आ रहल बा। हमरा गाँव के बन में काली माई, सिद्धि बाबा के अलावा शहीद बाबा भी बान। सिद्धि बाबा का दर्शनार्थी के शहीद बाबा के दर्शन जरूरी होला आ ई बात शहीदो बाबा के दर्शनार्थी प लागू होखेला। जब देश मजहबी लड़ाई से परेशान बा लेकिन हमार गाँव के दूनो मजहब के लोगे मिलजुल के गंगा जमुनी तहजीब के जिया के रखल बा । हमरा गाँव के नाम सोनहरिया धरा गइल बा त एके रहे देहला के काम। हमरा त ई नाँव बड़ा प्रिय ह। सोना गाँव में नइखे त का भइल नाँव में त बा न। एके ना केहू चोराई ना कवनो डकइत एके छीन सकता हमनी से। हमार गाँव हमरा खातिर सोना से कवनो माने में कम ना ह।

ग्राम+पोस्ट- सोनहरियाँ, भुवालचक, जिला- गाजीपुर, (उ.प्र.)

भोजपुरी पढ़ल जाउ, लिखल जाउ।

भोजपुरी एकांकी

मोकदमा

निर्भय नीर

[गधबेर के बेरा, खटिया पर धरमदेव सिंह आ मनराखन पांडे बइठल बाड़े, धरमदेव सिंह खइनी मलत बाड़न, आ मनराखन पांडे जनेऊ बनावत कहत बाड़न।] -

"गिरहथ के दिन अदिन हो गइल। साल भर जाङर ठेंठा-ठेंठा के आदमी कमाला, आऊर काटे के बेरा खेत में गइला पर, आँख में जोन्ही फुलाए लागता महराज। मन करेला कि डँरेरे पर हँसुआ ध के आ बइठ के अपना करम पर ठेहुना भर लोर चुआवो आदमी।"

एतना सुनते धरमदेव सिंह कह भइलन - " काऽ कहल जाव पंडी जी, रउआँ लोगिन के तऽ जजमनिका पा के कुछऊ सस्ती-महङी बुझइबे नइखे करत, पेंरात त बानी सँ हमनी गिरहथ।"

मनराखन पांडे - "का कहनी धरमदेव बाबू ! अब तऽ अइसन जमाना आ गइल बा कि जजमान पीठी पर हाथे नइखन जाए देत। पहिले गइला पर कहाँ उठाईं, कहाँ बइठाईं, लागल रहत रहल हऽ बाकिर अब त कवनो पाँवो नइखन स लागत। हइ पढुआ-लिखुआ त हमनी के कुछू बुझते नइखन सन।"

धरमदेव सिंह - "आरे बाबा एही से नूं दुनियाँ दिन पर दिन रसातल में मिलल जाता। पहिले 6 पसेरी के चाउर कुकुर आ कछुओ ना पूछत रहलन, बाकिर अब त डेढ़ सेर के चाऊर खातिर दोकान अगोरते-अगोरते मन अगुता जाता आ देह छिला जाता।"

मनराखन पांडे - "हँ हँ ठीके कहत बानी। गऊ माता आ बाभन देवता के जहिया से मान उठ गइल, तहिया से धरती के सउँसे संस-बरकत खतम हो गइल बाटे। जवन-जवन अनगुते आज ले ना पूछत रहे, तवन-तवन होखे लागल।"

[एही बीच बुधन तेली के 6-7 बरिस के लइका बाप रे बाप, दादा हो दादा, सुघन काका हमरा माई के मार के कपार फोड़ देले बाड़े, झर-झर लहू बहता, कहत लगे आके भुइँआ लोटियाए लागल।]

मनराखन पांडे - "काहे रे ! काहे मरलख रे ? बताव-बताव।"

लड़िका - "ऊँ-ऊँ-ऊँ - हमरा माई ना जीही ए बाबा, खून के पवनारा बहता ए दादा।"

धरमदेव सिंह - "आरे कुछ कहबो करबे कि खाली तेलही कटिया लेखा भभकबे करबे रे।"

मनराखन पांडे - "हँ हँ कहु रे, जे बात होखे से खुलासा कऽहु।"

लड़िका - "हमार माई दुआरी पर बहारन फेंकले रल सियऽ। (रोवता) काका हरवाही से अइले हँ त कहले हँ, कि दुआरी पर काहे बहारन बिगलू ह ? बहरी निकल के फेंक अइतू तऽ गोड़ के महावर झर जाइत का ? एही सभ से नू आदमी बेमार होला, एँएँएँ...।"

मनराखन पांडे - "हँ हँ ठीके त कहलख ह, भला दुआरी पर बहारन फेंकला के का फायदा, इहे सब नू बेमारी के घर होला। ई सब मन के सोखिए नू हऽ, अच्छा ! तब आउर का पूछत ह रे ?"

लड़िका - " एँ..एँ..एँ..तब हमार माई कहलख हिय कि हम अपना दुआरी पर कुछुओ करब, एमें दोसरा कोई के बाप के का भुलाइल बा। एँ..एँ..एँ..।"

धरमदेव सिंह - "हँ ठीके त कहलखिअ, अपना दुआरी पर केहू जटही काँट बोए, चाहे पैखानाघर बनावे, एह में अगर दोसर केहू टेंट बेसाही त ऊ कवनो भल आदमी कहाई का ?"

मनराखन पांडे - "तहरे कहले ऊ ठीक कहलख आ ठीक कइलख। बेमारी होई त खाली ऊहे मरी कि टोला-महाला आ गाँव-जवार के भूँजा भूँज के छोड़ दी। हँ हँ कऽहु ओकरा बाद का पूछत ह ? "

लड़िका - [सुसुक के] "एह पर काका खिसिया के कहले ह कि दुआरी पर बहारन ना बिगाई चाहे जे कुछ होखे, तब हमार माई गारी देवे लागल हिय त काका हरवाही के पैना से भुलइला गदहा लेखा ओकरा के ठेठवले हँ।"

धरमदेव सिंह - "भला कहीं तऽ, ऊ दोसरा के बेकत पर हाथ उठाई, ओकर अइसन हिम्मत ! जेकरा जे मन में आई से ऊ करी। उनकर अगरऽधल हम सब छोड़ावत बानी, चल त हम देखीं।"

मनराखन पांडे - "ना-ना, ऊ कवनो बेंजाँय कइले बा का ? ऊ बड़की मुँहजोर हइए हिअ। छुटले मुँहे गारी देवेले। अरँग देवता के भरँग पूजा। ओकरा लायक नीमन पूजा देहले बा।"

धरमदेव सिंह- "हँ हँ, ओकरा के नीमन कहबे करेब। सुघना राउर एह घरी हरवाही नू करत बा। हम त दूध के दूध आ पानी के पानी कइले बिना ना छोड़ब। हम सुघना के खेला-खेला के पानी ना पियवनी त हमार नाम बदल देहब। का जाने ऊ कवना घमंड में मातल रहेला।"

[बुधन के बथान में- लड़िका सुसकत बा - बुधन गाल पर हाथ ध के मन मार के मचान पर बइठल बाड़न। धरमदेव सिंह धोती के फेटा कसत झटकत बथान में ढुकत कहलन।]

"कह रे बुधना, ते इहाँ गाल पर हाथ ध

के बछमूँहा नियर मुँह बना के बइठल बाड़े, आ तोरा बेकत के ई हाल ? धिक्कार ह अइसन मरद भइला के। आज तोहरा मेहरारु के मरले बा, काल्ह तोहरा के मारी। जमुहाँ के छुअला के डर ना होला, ओकरा परिकला के डर होला।"

बुधन - "जाए दी मालिक, आपन भाइये नू हऽ। तनि गलतिये कर देहलस त का करल जाई। गगरी एक लगे रहेला त ढाबा लागबे नू करेला।"

धरमदेव सिंह - "बस करऽ, आपन पिंगल मत पढ़ऽ, बुझा गइल कि ते कइसन मरद बाड़े । हमा-सुमा के बेकत पर केहु अङुरी उठा दिहित त ओही घरी सतर जाना के भाला से गाँथ देतीं।"

बुधन - "त का कहतानी, ऊ छोट भाइये नू हऽ, तनी ठुनियाइये देहलस त कवनो इज्जत कम हो गइल का ? ओकर भउजाइये नू हियऽ , कवनो भवे ना नू हियऽ।"

धरमदेव सिंह - "तोरा तऽ मतिये में जाने का भरल बा, भला केहू के मेहर-बेटी के केहू कपार फोड़ दिही आ ओकर कवनो इज्जत ना जाई। अइसन तहार लोहा आ पत्थर के इज्जत हो गइल बा कि ओह पर कवनो रेप ना लागी।"

[मनराखन पांडे सुघन के सडें बथान में अइलन आ आवते कहलन।]

"सुघना एकदम ठीक कइले बा। ऊ बड़ा बरुआ भइले बिया, अपना आगे केहू के गुदनबे ना करेले। सबका के दरमस के चलेली। जइसे कहीं के रानी महारानी भइल बाड़ी।"

[खटिया पर से उठ के खड़ा होके पगड़ी बान्हत धरमदेव सिंह कहलन।]

"ऊ दरमस के चलेली त उनकर कपार फुटल, आ ई अइँठि के चलेले त इनकर सभाखन होता। डाँड़ में रास्सा लगा के चौकिदार से ना खिंचवा दिहनी त कहिह कि केहू का कहलस। ललका घर के खिंचड़ी ना खिअवनी त हमरा नाम पर कुकुर पोस दीह।

[सुघना के गर्दन ध के] - का रे सुघना ते का बूझत बाड़े कि बुधना के पीठ पर केहू हइये नइखे ?"

मनराखन पांडे - "अरे जा हो धरमदेव ! तुहूँ ई मत बुझि हऽ कि सुघना कवनो रांड़-बेवा ह, तहरा जवन बुझाव से कर गऽ। हाई कोर्ट ले देखल जाई। तूँ हूँ कवना गुमाने मातल बाड़ऽ, देखल जाई। हमरो नाम मनराखन पांडे ह। तू चाउर देके पढ़ल बाड़ त हमहूँ कवनो कोदो देके नइखीं पढ़ल। तहरा से बीस हईं ओनइस ना।"

धरमदेव सिंह - "आच्छा त धरमदेव चलले, अब इजलास में भेंट होई।"

[समय- 7 बजे अनगूते। धरमदेव सिंह के दुआर। धरमदेव सिंह मुँह धोवत

बाड़न। बुधन उनकर कुट्टी काटत बाड़न।]

बुधन - "सरकार मोकदमा में अब ले केतना रुपिया टुटल होई ?"

धरमदेव सिंह - "तू आपन काम करऽ, एकर हिसाब बाद में होखी नू। सब तहरा के बतला देहब।"

बुधन - "ना ना तनी जान लेतीं त मन के सबुर हो जाइत।"

धरमदेव सिंह - "सब मिला के लगभग डेढ़ लाख के माथ धइले होई।"

बुधन - "बाप रे बाप ! ई सब रुपिया कहाँ से आई ए दादा ? दिन भर त हरवाहिये कऽ के अपना लइकन सेयान के कलगुजारी चलावत बानी। एक साँझ जुटाईं त दोसरा साँझ के फिकिर में मुअत रहींले आ अब ई ऊपर से डेढ़ लाख कहाँ से आई ए भगवान !"

धरमदेव सिंह - "कहाँ से आई ? बुरबक कहीं का ! सब भगवान दीहें। आरे ! खेतीबारी, गहना-गुरिया सब जूने-कुजूने खातिर नु होला। तोरा मेहरारू के कवनो गहना-ओहना होखे त ले अइहे हिसाब हो जाई।"

बुधन - "सरकार, गरीब आदमी के देह पर गहना कहाँ से। बेचारी के नइहरे के एगो अधसेरा बाजूबंद भर बा, बाकिर ओह से भला का होखी।"

धरमदेव सिंह - "ना त कवनो ना कवनो उपाय करहीं के पड़ी। हमरा दुआरी पर जवन तहार दू काठा खेतवा बा, तवने लिख दे। बाकिर आउर सब आगे-पीछे देखल जाई। घटला बिघटला खातिर हम बड़ले बानी।"

बुधन - "मालिक ऊहे त दू काठा खेते बाँचल बा, जवना में लड़िका सभन अझुराइल रहेलन स। आ ओहू पर धनई साह के पाँच हजार बड़की छउड़ी के बियाह में करजा लियाइए गइल बा। हमार लइका त एगो बाल के होरहा खातिर छछन के रह जइहन सन।"

धरमदेव सिंह - "एही कुल्हि से नू तोहनी के मर-मुकदमा में हम ना जाएके चाहेनी। एगो त अपने नून-तेल नापऽ, दोसरे बदनामियो मिल जाला। आच्छा, अब मोकदमा लड़बऽ भा ना लड़बऽ ,हमार हिसाब किताब कर द, ना होखे त सऽदे कागज पर आपन अँगूठा के निशान दे द। हम त तहरा के आपने सवाङ नू बूझेनी।"

बुधन - "हँ हँ हमनी के सङे त अपने सभे निगद नेकी कइले बानी। एक भाई के पांडे जी फुटका के हर ठेलवावत बानी आ रउआँ हमरा गरदन में फाँसी लगाइए देनी। गरीब के कहीं निस्तार नइखे। हे भगवान, एह गरीबन के कब ले उद्धार करबऽ।"

- एकमा, छपरा, बिहार।

कहानी

किराया के परिवार

आनन्द सन्धिदूत

हीरालाल कँहार पैदा त झाँसी में भइल रहलन लेकिन अपना रेखिया उठान काल का उमिर में मिर्जापुर आ गइलन झाँसी का एगो प्रशासनिक अधिकारी के घरेलू नौकर बनि के ऊ मिर्जापुर पहुँचलन दू-चार साल का सेवा का बाह प्रशासनिक अधिकारी के बदली त कहीं अउर हो गइल बाकिर हीरालाल संगे ना गइलन। उनके मिर्जापुर के पर्वत -पोखरा-वृक्ष-वनस्पति एतना नीक लागल कि एह प्राकृतिक ऐश्वर्य के छोड़ के कहीं अउर जाए के उनकर मन ना कइल। ऊ जीविका खातिर एगो रेक्सा कीन लिहलन आ एगो किराया का कमरा में जीवन जिये लागलन हीरालाल का कमरा का बगल में कोदई राम के किराए के कमरा रहे कोदई राम जिला प्रशासन में अस्थाई चपरासी रहलन ऊ बाल बच्चेदार आदमी रहलन उनका मेहरारू का अलावे तीन गो संतान रहली स। सबसे बड़ लड़का रहे जवन के नाम बिदेसी रहे। ओकरा पीठ पर एगो लइकी बसमतिया रहे आ एगो लइकी कोरा में रहे। ओकर नाम रजनी रहे। कुछ ही दिन रहला के बाद हीरालाल के प्रगाढ़ परिचय कोदई राम का परिवार से हो गइल लड़की चाय-ओह बनावे त हीरो लाल के दे दे। कोदइयो बो बड़ा आदर देते रहली कोदइयो राम हीरालाल के गैर ना समझत रहलन। हालांकि कोदई बड़ा गंभीर आदमी रहलन। उनका मन में का बा ई जल्दी पता ना चलत रहे। कोदई राम के परिवार के गाड़ी बड़ा नीक चलत रहे। एही बीच एगो घटना ई घटल कि कोदई राम के नौकरी अस्थाई से स्थाई हो गइल आ उनकर नौकरी पक्की के नियुक्ति फैजाबाद में हो गइल। कोदई राम बड़ा खुशी-खुशी फैजाबाद रवाना भइलन हीरालाल अपना रेक्सा पर बइठा के बस अड्डा तक छोड़े गइलन।

कोदई फैजाबाद ज्वाइन कइलन आ अचानक पता ना अइसन का भइल कि उनकर मन मिजाज एकदम बदल गइल फैजाबाद पहुँचला के एगो चिट्ठियों ना भेजलन घर खर्चा वगैरह भेजें के सवाल

त बाद में आवेला मोहल्ला के एकाध-गो अदिमी फैजाबाद में रहे। ओह लोग से उड़ती खबर मिलल कि ऊ फैजाबाद में अपना साथ काम करे वाली एक औरत से प्रेम विवाह कइ लेले बाड़न। कोदई बो खबर सुन के न खुस भइली न नाराज। अइसन लागल जइसे उनका पहिले से पता रहे कि अइसन होखे वाला बा। हीरालाल एह संकट में कोदई बो का साथ रहलन। ऊ कोदई का परिवार के एको दिन उपास सूते ना दिहलन। ऊ परिवार के भोजन कपड़ा-शिक्षा-चिकित्सा आ बायेन-पेहान लोक व्यवहार के सारी जिम्मेदारी अपना कंधा पर ले लिहलन। अब केराया के दूगो कमरा एक हो गइल रहे। हीरा राशन-पानी ले आके देसु आ कोदई बो लइकन का साथ -साथ हीरो लाल के चाह-नाश्ता दूनो बेरा भोजन बना के खियावल करसु। बड़का लइका बिदेसी त नहीं बाकिर लइकिया हीरा के बाबू बाबू कहे लगली स। जब कोदई घर छोड़लन वो घरी बिदेसी सात दर्जा में पढ़त रहे। हीरा ओके महसूस ना होखे दिहलन कि ऊ बाप के छोड़ल संतान हउए। हीरो अपने फाटल पुरान पहिनसु बाकिर बिदेसी के स्कूल ड्रेस से लेके घर का कपड़ा तक नया आ जुग जमाना का साथ राखे के कोशिश करसु। बिदेसिओ पढ़े में तेज रहलन। हमेशा क्लास में फर्स्ट आवसु। तकदीर ठीक रहे आ ऊ अंग्रेजी से एम.ए. कइ के दक्षिणांचल का एगो इंटर कॉलेज में अंग्रेजी के लेक्चरर हो गइलन। बिदेसी के अपना गोड़ पर खड़ा होखे में हीरा अपना खून पसीने के पानी नियर बहवलन बाकिर बिदेसी का मन में एकर कवनो एहसास ना रहे। दक्षिणांचल में नौकरी भइले पर जब हीरा का हृदय में प्रेम छछाय त एक दिन रेक्सा चलावल बंद कइके बिदेसी से मिले जासु। बिदेसी मिल त लेसु आ भोजन पानी करावसु बाकिर हीरा से साफ कहि दिहल करसु कि एहिजा मत आइल कर। बिदेसी का स्कूल का सर्टिफिकेट में बाप के नाँव कोदई राम लिखल रहे। फेर अपना दोस्त मित्रन में हीरा के परिचय का कहि के देतन। ओहू में हीरा लाल के साफ-साफ साँच बोले के आदत बातचीत में कवन सत्य उगिलित, पता ना रहे। बिदेसी एकाध बेर त हीरा के बाँहि धइ के ठिठरावत आ करिहाँइ पर लातन मार के भगावत भी लउकलन। बाकिर हीरा ई कहल ना छोड़लन कि बिदेसी के हम लेक्चरार बनवले हई। हीरा मार खा के आ निरादर होके उपेक्षित भइलो पर आपन कर्तव्य से ना डिगलन ऊ बिदेसी के सादी बिआह ओही का जाति में कराके

निश्चिंत हो गइलन।

कोदई की दूसरी संतान बसमतियों पढ़े में नीक रहे। सरकारो का ओर से लइकिन का शिक्षा में सहायता मिले लागल। बसमतिया इंटर बी.टी.सी. कइके प्राइमरी में टीचर हो गइल। हीरा एकर बिआह एगो कारखाना में काम करे वाला लइका से कइलन बसमतिया हीरालाल के दुर-दुरावे त ना बाकिर इतना जरूर कहले कि बाबू तू हमरा किहें आइल मत कर। ऊ जाड़ा-पाला का दिन में हीरा के गंजी पैजामा खरीद के भेज देले। हीरा खुश होके ई भेंट-उपहार अदिमिन के देखावत रहलन। हीरा तीसरी संतान रजनी के बड़ा मानत रहलन। ऊ इंटर में एन.सी.सी.लेले रहेल। रजनी सुंदर भी रहे। गोर फूल का थरिया का रंग के शरीर, सहूर में हुसियार, पढ़े-लिखे में तेज, सीये-पूरे में फरहर, नाचे-गावे में प्रवीण ऊ पूर्ण नारी भइल जात रहे। हाई स्कूल पास करत छाती पर उग आइल दू गो गुलाब के फूल हालाँकि एकरा रक्षा खातिर प्रकृति अगल-बगल काँटा ना देले रहे। रजनी तेज चले त ओकर फूल दलके लागे। थलबल-थलबल नितंब भार पर पहिरल एन.सी.सी. के यूनिफार्म जूड़ा झलकल माथे कैप आस्तीन मोड़ल कंचन हाथ लेकिन चूड़ी बिहीन। एक हाथ में करिया घड़ी के पट्टा सामने ताकीं त बिहारी का दोहा अस अर्थ पर अर्थ खोलत दूगो नयन छंद। आँख का नीचे चोख नासिका दूनो ओर खिलल खिलल गाल सुरहुर सुराही अस गर्दन, जे देखे ऊ देखते रह जाय अपना सौन्दर्य ऐनक में देख रजनी खिलखिला उठे। नारी जब आत्मविश्वास से भर उठेले त प्रेम करेले। रूप का आत्मविश्वास से भरल गुन का आत्मविश्वास से भरल विद्या का आत्मविश्वास से भरल आ वीरता का आत्मविश्वास से भरल रजनी जब अपना सहेली का घरे गइलि त एगो जाट सिपाही का नजर में गड़ गइल। रजनी कुल जानत रहे बाकिर झूठ परीछे ना जानत रहे। ऊ अविसवासी वासना के अर्थ ना जानत रहे। मीठ बोली का जहर से अपरिचित रहे। जाट सिपाही रजनी का सहेली का घर के किरायेदार रहे। ऊ रजनी के बंदूक से निशाना साधे सिखावे लागल। ऊ बंदूक चलावे बंदूक कंधा से सटावे पेटकुनिया लेट के निशाना लगावे का बहाने रजनी का बगल में करवटिया लेटल जाट का ऊष्मा से रजनी का गुदगुदी बरल। फेर हँसी ठनकल आ रजनी का प्रेम हो गइल। रजनी पेट के बात सउँसे उगिल के धइ दिहलसि, सिपाही का आगे-ऊ मन के कसकत दर्द समाजिक उपहास भविष्य के महत्त्वाकांक्षा एगो मजबूत साथी के तलास ... कुछ ना छिपवलस रजनी। लेकिन जाट सिपाही सच ना बोलल। ऊ

दू लइका के बाप कुवार बन गइल। रजनी विश्वास कइ लिहलस। ऊ सभीत हरिनी अस ताक के जाट का सघन केस से भरल छाती पर मूँद के आँख ओठंग गइलि। आँख खुललि त सहेली मुस्कुरा उठलि। बिना बिआहे के...। लेकिन तब तक देर हो चुकलि रहे सच्चाई क जीव फरिआए लागल। मिचली आवे लागल। रजनी का विश्वास रहे कि जाट धोखा ना दी। जाट कहलस कि अभी खरवाँस बा। मई-जून में बिआह होई। तब तक हमार बदली हो जाई त मेरठ चलल जाई आ ओहिजे घर बसावल जाई। कुछ अइसन काम पड़ल कि मई-जून बिना बिआहे के निकल गइल। जुलाई-अगस्त शिकवा शिकायत में एक तब तक भावी शिशु पेट में हाथ-पैर उठा के प्रश्न करे लागल। नागिन अस फुफकारत रजनी एक बेर फेर जाट सिपाही का आवास पर गइली। पता ना भेट भइल कि ना बाकिर रजनी लवटि के ना आइल। घरो पर केहू ना रहल, कोदई बो के देहांत हो चुकल रहे। बसमतिया अपना घर गिरहस्ती में बाझल। फोन-चिट्ठी के सम्पर्क कइ पावत रहे। बिदेसी का कवनो मतलबे ना रहे। बचलन हीरा ऊ साँझ के रात होखे तक रजनी के इंतजार कइलन कि अब ऊ आई आ रोटी सेंकी लेकिन रजनी ना आइल। हीरालाल ओही राती पुलिस में रपट लिखवलन। ऊ हितई- नतई ओझा गुनी पोखरा-तालाब रेल-सड़क सगरो खोजलन लेकिन रजनी ना मिललि। ऊ भादों का दरियाव के गिड़ोर के तकलन आँख भादों-भादों हो गइल लेकिन रजनी ना मिललि। हीरा के लागल कि अब रजनियो हमके चीन्हे से कतरात बा। एह घटना के घटला कई बरिस भइल। तब तक बड़ा परिवर्तन हो चुकल बा। अब हीरा से रेक्सा नइखे चलत। ऊ साइकिल आ रेक्सा मे पंचर साटे के दुकान खोल लेले बाड़न पंचर साट के दस-पंदरह रुपिया के रोज आमदनी हो जाला। अब ऊ किराया के कमरा छोड़ के सामने कुआँ सिवाला का जगत से लागल एगो पांच फीट गहरा साढ़े चार फीट चौड़ा आ एतने ऊँचा एगो कमरा बना लेले बाड़न। एह कमरा में चार फीट के एगो चारपाई, एगो खखड़ा बक्सा एगो साइकिल आ कुछ बर्तन का साथ एगो मिट्टी का तेल के स्टोप अट गइल बा। हीरा लाल उग्र सोभाव के हउअन। कई बेर उनकर झगड़ा पंचर का ग्राहक से हो जाला। एगो ग्राहक त उनके पटक के बड़ी मार मार दिहलस। एह में हीरा के ऊहे हाथ मुरुक गइल जवना हाथ से ऊ पंचर साटत रहलन। ऊ पुलिस में रपट लिखवलन लेकिन पुलिस हँसि के चल

गइल। हीरा पराजितो होके अपना के कमजोर ना मानसु। ऊ सतावे वालन के सरापसु ना। ऊ वीर हउअन। ऊ वीरता के बात करेलन। हीरा का बक्सा में रजनी के एन.सी.सी. वाला फोटो अबहिंयो बा, जेसे बातचीत होला। ऊ तुरन्त बक्सा में से रजनी के फोटो निकालेलन आ पूछेलन- बाबू एके कहीं देखलअ ह ? ऊ हमरो के फोटो देखवलन। हम कहलीं कि छोड़ हीरालाल तोहार किराया के परिवार रहल ह एकर अन्त अइसहीं लिखल रहल ह।

संपर्क - 8874390156

लेखक लोगन से आग्रह

सँझवत *का साधारण अंकन खातिर लेखक लोगन से आग्रह बा कि प्रकाशनार्थ रचना पत्रिका का ई मेल पर भेजल जाउ।*

आपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना हिंदी यूनिकोड (मंगल फांट) में टाइप क के भा अपना मोबाइले से टाइप क के पत्रिका का ई मेल पर भेजल जाउ। कवनो तरह के पूछताछ भी एही मेल पर।

sampadaksanjhavat@gmail.com

सीमा मिश्र

गजल

विद्या शंकर विद्यार्थी

आदमी अब बदल रहल बाटे
सादगी अब सम्हल रहल बाटे

चाह के ऊ दरद दिहत बाड़न
जिंदगी अब उछल रहल बाटे

राह में चोख चोख ढेला बा
जल चुवे से भिहल रहल बाटे

ताजगी के अरज कवन बाटे
आज जे दिल दहल रहल बाटे

रोशनी हार से डरल नइखे
झोंपड़ी बा कहाँ महल बाटे

गीत लिखीं

सतीश प्रसाद सिन्हा

गीत लिखीं, नवगीत लिखीं
हारल मन में जीत लिखीं।

जे हतियारा
हतिया कइ के छूट गइल
जे तिरिया के
बेशरमी से लूट गइल
ओकर करिया करनी
करुआ तीत लिखीं।

घर कतना हर साल
बाढ़ में डूब गइल
राहत के चरचा
कागज पर खूब भइल

लिखीं आजु सभ,
पीड़ा-भरल अतीत लिखीं।

केहू के बा चिंता
अपना गद्दी के
पागल केहू
भाषाई चउहद्दी के

घर के दुश्मन बनल
देश के हीत, लिखीं।

जात-धरम के केहू
रोटी सेंक रहल
सीधा जन पर केहू
फंदा फेंक रहल

राजनीति के कुटिल
नीति के रीत लिखीं।

डेग-डेग पर
आतंकी बारूद छिपल
राहगीर के मउअत के
सामान बिछल
सभकर जिनिगी आजु
भइल विपरीत, लिखीं।

कुसुमांचल, अंबेदकर पथ, बेली रोड,
पटना- 800014

चलीं जा प्रेम बाँटे

गीता चौबे 'गूँज'

सुंदर मंद समीर बहेला, मन के लागे नीक।
बड़ा मगन तरुवर झूमेला, बन में गावे पीक।।
समाचार धरती के पूछे, दउड़ल आवे मेह।
उमड़-घुमड़ धानी अँचरा पे, बरसा दिहले नेह।।

जेठ के जऽरल धरती रानी, भइली बड़ी विभोर।
प्रणय-निवेदन मेघा के सुन, ढरल खुशी के लोर।।
सूख रहल धरती हरसइली, गइली बड़ी अघाय।
मन में लड्डू फूटे लागल, गइली तनिक लजाय।।

चारे दिन के ई चंदनिया, फिर त उहे अन्हार।
रंग बदलते मौसम संगे, चलते बनी बहार।।
आइल-गइल त होत रहेला, बतिया हउवे साँच।
जे एकरा के गूनल मन में, ओपे कइसन आँच।।

जलन-कुढ़न सब मन से तेजीं, नश्वर बा संसार।
चलीं प्रेम संदेशा बाँटीं, जिनगी के दिन चार।
इहे कमाई कइला पर ही, खुश होले भगवान।
अतमो आपन खुश हो जाली, निकलेली जब जान।।

कविता

मुट्ठी में त आज हमरो आसमान बा

विजयानंद विजय

टहटह अँजोरा बा
नयका बिहान बा।
स्नेह आ प्यार से
भरल जहान बा।
पूरा होई लालसा
इहे अरमान बा।
मुट्ठी में त आज
हमरो आसमान बा।

जिनिगी में सबका के
तनिका सा दुख बा।
ओकरे में खोजला पर
हेतना-सा सुख बा।
घोर अँधियरिया में
रोशनी के प्राण बा।
मुट्ठी में त आज
हमरो आसमान बा।

जीवन-मरण सब
कुदरत के हाथ बा।
संघर्ष आ मनोरथ से
छूटल कवन साध बा ?
हार के जे बइठ गइल
उहे पछतात बा।
मुट्ठी में त आज
हमरो आसमान बा।

जागीं,उठीं,चलीं, दउड़ीं
रुके क कवनो काम बा ?
रूकल आ ठहरल पानी
सड़ गइल, बेकाम बा।
मन से जे मर गइल
का मुरदो में जान बा ?
मुट्ठी में त आज
हमरो आसमान बा।

- गजाधरगंज, बक्सर (बिहार)

कवि कुलभूषण स्व.अंजन जी का प्रति उद्गार

कतनो बड़ाई करीं शब्द में समाई नाहीं
माई भोजपुरी के सपूत बानी अंजन जी,
जियरा जुड़ात बाटे रचना के पढ़ि-पढ़ि
सरल सुभाव अवधूत बानी अंजन जी।
करम बचन मन एके पथ पर चले
माईभाखा खाति अग्रदूत बानी अंजन जी,
चमके पटोर जब ताना-बाना पोठ रहे
भोजपुरी चुनरी के सूत बानी अंजन जी।।

कन्हैया प्रसाद रसिक

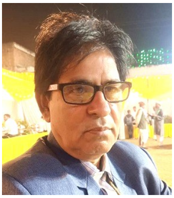

वसंत

संगीत सुभाष

जेकर आगम जानि हिया हरसे,
तन माँहि उमंग समाला।
जीव सभे अगुवानिहिं में
बनि के ठनि के रहिया बिछि जाला।
पादप माँथहिं बान्हि क पाग
खड़ा लइ हाथ अनेकन माला।
पूछत लोगहिं केइ हवे त
बतावत नाम वसंत कहाला।

ठाढ़ भई लतिका तनि के,
अबले रहली धरनी छितरा के।
मोंजरि आम क डाढ़िन-डाढ़िन,
फूलन से बगिया गदरा के।
लाल गुलाब क आँखिन से
मदिरा टपके हुलसे इतरा के।
कोइलि तान सुनावति बा,
चहुँ ओर वसंत चले अगरा के।

मुसहरी, गोपालगंज।

गजल

रामरक्षा मिश्र विमल

फूल जब से काँट से कतरा रहल बा
गंधलोभी पाँव से कचरा रहल बा।

सूचना बाटे बनल सिरमौर इहवाँ
चेतना घर-बार से बहरा रहल बा।

जोखि के विद्या भराइल बोतलन में
दूध बचपन पर मुआ बिखरा रहल बा।

ई दबाई पेट ऊ धरती छोड़ाई
दइब कइसन ई बिपद बजरा रहल बा।

सत्य ए तरहा घिरल तकनीक से बा
झूठ सीना तानिके इतरा रहल बा।

बा इ जिनिगी अब 'विमल' तहरे हवाले
ध्यान दीहऽ अब दिलो दुबरा रहल बा।

बड़कागाँव सबल पट्टी, बक्सर।

गजल

अनीताशाह

प्यास अँखियन के समंदर का बताई,
छल हवा कइलख बवंडर का बताई।

हाथ के लेखा मिटाके देख लिहनी,
दुख गरीबन के मुकद्दर का बताई।

मुफलिसी में हित छुटल सभि दूर गइले,
मूर्ति बा चुपचाप पत्थर का बताई।

खूब महफिल में सजेला रूप सूनर,
सादगी के दर्द भीतर का बताई।

रोज तहरा से मिली रचके बहाना,
प्यार से अब सून बा घर का बताई।

जे फकीरी कर रहल ऊ मस्तमौला,
सुख रवानी के कलंदर का बताई।

मौत आपन के भइल दुश्मन बनाके,
खून के अब जात खंजर का बताई।
- नेपाल।

गीत

रामेश्वर प्रसाद सिन्हा 'पीयूष'

कहब तू जवने कुछ तोहके चढ़ाइबि,
बाकिर नयनवाँ के लोर जनि माँग।

जब-जब तू चहल, खुसी देइ दिहलीं
अपना हिया के हँसी देइ दिहलीं
कहब त खुसियन के ढेरी लगाइबि,
बाकिर सवनवा सजोर जनि माँग।

जबे-जबे अइल तू मनवाँ का खोरी
भरि-भरि दिहलीं तरइयन से झोरी
कहब त ढेर पुरनवाँसी बढ़ाइबि,
बाकिर अमवसा के कोर जनि माँग।

जब-जब फागुन जिनिगिया में आइल
हियरा में अजगुत अनेसा समाइल
भर हीक फगुनहटा तहके पियाइबि,
बाकिर चईत के झकोर जनि माँग।

जिनिगी के बाजी पर सब कुछ गँववलीं
केहू से कुछऊ कबहुँओं ना पवलीं
कहब त सपनो के थाती लुटाइबि,
बाकिर हिया के मरोर जनि माँग।
- शंकर भवन, सिविल लाइंस, बक्सर (बिहार)

किताबि : एक नजर में

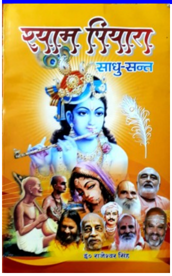

भोजपुरी महाभारत
संस्करण : प्रथम,
सन् २०२० ई०
पृष्ठ : 300
मूल्य : तीन सौ पचास रुपया मात्र

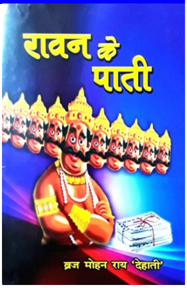

घरेलू नुस्खे
संस्करण : प्रथम, सन् २०२० ई०
पृष्ठ : 72 मूल्य : रुपया साठ मात्र

दीक्षा-गुरु
संस्करण : प्रथम,
सन् २०२० ई०
पृष्ठ : 276
मूल्य : रुपया चार सौ मात्र

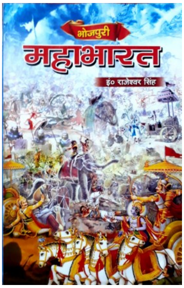

श्याम पियारा साधु-सन्त
संस्करण : प्रथम
पृष्ठ : 204,
सन् २०२० ई०
मूल्य : रुपया दो सौ मात्र

एह सभ किताबन के लेखक बानी-
ई. राजेश्वर सिंह
आ ई सभ किताब

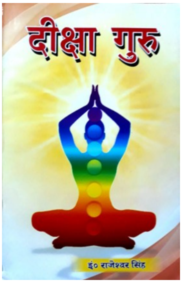

लोकायत प्रकाशन,
बी-2, सत्येन्द्र कुमार गुप्त नगर लंका,
वाराणसी-221 005
से प्रकाशित भइल बाड़ी सन।

रावन के पाती
(भोजपुरी व्यंग्य-संग्रह)
लेखक : ब्रज मोहन राय 'देहाती'
संस्करण : प्रथम, सन् 2020
पृष्ठ : 112 मूल्य : 211/- रुपये

प्रकाशक
जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद्
होल्डिंग नं० - 102, जोन नं० - 11,
भोजपुरी पथ, बिरसानगर,
जमशेदपुर - 831019, झारखंड

हरियरी रोपत हथेली
रचयिता : कनक किशोर
प्रथम संस्करण 2020
पृष्ठ : 130
मूल्य - 250.00/-

प्रकाशक
सर्व भाषा ट्रस्ट
जी-65-66, गली नं. - 20, राजापुरी, उत्तम नगर, नई दिल्ली-59

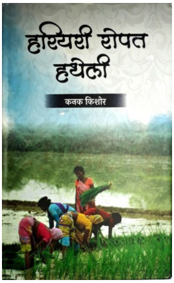

किताबि : एक नजर में

शीशा के चूर

(गीत-संग्रह)

रामेश्वर प्रसाद सिन्हा 'पीयूष'

संस्करण : प्रथम, 2006

पृष्ठ : 96

100/- रुपये

प्रकाशक

पुष्कर प्रकाशन

शंकर भवन, सिविल लाइन्स,

बक्सर (बिहार)

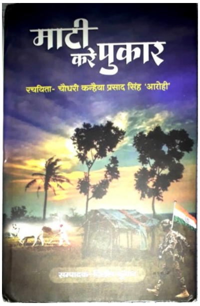

माटी करे पुकार

(भोजपुरी कविता-संग्रह)

रचयिता चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह 'आरोही'

प्रथम संस्करण - 2020

पृष्ठ : 122

मूल्य - 250.00/-

प्रकाशक

सर्व भाषा ट्रस्ट

प्लॉट नं.- 65-66, जी-ब्लॉक, गली नं. 20

राजापुरी, उत्तमनगर, नई दिल्ली -110059

डेगे डेग अँजोर

(भोजपुरी कहानी संग्रह)

लेखक

कन्हैया सिंह 'सदय'

मो.9122911619

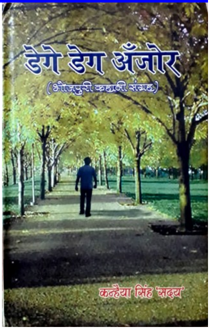

संस्करण : प्रथम, जनवरी, 2011

पृष्ठ : 124

मूल्य : 135/- रुपये मात्र

मनसा

(भोजपुरी कहानी संग्रह)

लेखक

कन्हैया सिंह 'सदय'

संस्करण : प्रथम, 1976

पृष्ठ : 78

दाम-तीन रोपेया

दूनो किताबन के प्रकाशन जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद् , 102, भोजपुरी पथ, जोन नं० - 11, बिरसानगर, टेल्को, जमशेदपुर - 831004 से भइल बा।

आचार्य-कवि पंडित धरीक्षण मिश्र

- केशव मोहन पांडेय

पंडित धरीक्षण मिश्र का आचार्यत्व पर चर्चा के जब बात चलेला त हमरा सबसे पहिले उहाँ के सरस्वती वंदना इयाद आवेला। अपना सरस्वती वंदना में उहाँ के अपना मन के सगरो बात रखि देहले बानी। एतने ना, ओह वंदने से साफ हो जात बा कि कविवर के आदर्श कवि आचार्य केशवदास रहले। केशवदास के तरे ऊहाँ के अपना कविता में काव्य-कला के आग्रही रहनी। नीचे प्रस्तुत सरस्वती जी के वंदने से साफ हो जात बा कि ऊहाँ के कविता खातिर का चाहत रहनी आ का सोचत रहनी। ऊहाँ के लिखत बानी -

काया हमें कर्मठ कबीर के समान दे दे,
काव्य की कला में हमें केशव बना दे तूँ।
विमल प्रसाद तुलसी का हमें दे दे देवि,
सुकवि सनेही के प्रवाह में पगा दे तूँ।

ऊहाँ के लिखल एगो अउरी सरस्वती वंदना देखीं -

सेत सारी संयुत शरीर सोहे सारदा के
कुंद फूल हार अइसे सोहे जइसे चंदना।
पुस्तक समेत बीन हाथ सोहे आसन के
अमल कमल दल दुति परे मंद ना।
वंदना तोहार नित्य करेलें त्रिदेव, हम
कइसे करीं वंदना बनावे आवे छंद ना।
वंदना कइल बा कि बंद ना करबि हम
वंदना करबि जब ले सुनबू ना वंदना।

साहित्य अकादेमी से छपल विनिबंध 'भारतीय इतिहास के निर्माता धरीक्षण मिश्र' में डॉ. वेदप्रकाश पाण्डेय जी अपना 'आचार्यत्व' खंड में लिखत बानी कि धरीक्षण मिश्र भोजपुरी भाषा आ साहित्य के पहिलका अइसन समर्थ कवि हईं, जे कवि-कर्म के साथ-साथ अलंकार-शास्त्रो के रचना कइनी। अनेक यशस्वी लेखक आ कवि भइल लोग, बाकिर हिंदी में केशवदास जइसन कवनो आचार्य कवि ना भइले। भोजपुरी में ओह आभाव क पूर्ति धरीक्षण मिश्र से भइल। धरीक्षण मिश्र भोजपुरी के अब तक के ज्ञात इतिहास के अकेले कवि बानी, जे अपना दूनो भूमिका -

कवि-रूप आ आचार्य-रूप के सफलतापूर्वक निर्वाह कइनी। उहाँ के एगो विरल-विशिष्ट कविये ना, एगो उद्भट आचार्य कवि रहनी।

पूर्वी उत्तर-प्रदेश के तमकुहीराज (कुशीनगर) क्षेत्र के बरियारपुर के धरती पर जन्म लेबे वाला भोजपुरी के पहिलका आचार्य कवि स्व. पण्डित धरीक्षण मिश्र जी केहू के परिचय के मोहताज नइखीं। धरीक्षण मिश्र भोजपुरी के एगो महान साहित्यकार रहनी। व्यंग्य ऊहाँ के जनमजात विधा रहल। कविता में ऊहाँ के रस, छंद आ अलंकार के आग्रही रहनी। ऊहाँ के रचनन में अलंकार, छंद समरथता के व्यापकता एगो गौरव के बात हऽ। ऊहाँ के प्राचीन आचार्य लोग के तरे काव्यशास्त्र के मर्यादा में रहि के काव्य-सृजन के साधक रहनी। भोजपुरी जइसन लोकभाषा में, जवना के कई दशक से आंदोलन आ माँग कइलों के बाद सरकार आठवीं अनुसूची में नइखे जोड़त, कविवर मिश्र जी संस्कृत के जटिलतम माने जाए वाला 'शिखरिणी' अउरी 'अमृतध्वनि' जइसन छंदन के सार्थक आ सफल प्रयोग कइले बानी। ईहे कारण बा कि बहुमुखी प्रतिभा के धनी कवि के रूप में ऊहाँ के साहित्यिक जगत में एगो सम्मानजनक आ भोजपुरी के पहिलका आचार्य कवि के स्थान प्राप्त भइल बा। कविवर मिश्र जी के एही गुन के कारने प्रख्यात साहित्यकार लोग भोजपुरी के कबीर कहल ना भूलाला लोग। वइसे, व्यक्तिगत रूप से हमरा ऊहाँ के केहू से तुलना कइल आछा ना लागेला, काहेंकि कविवर तुलना के ऊपर के साहित्यकार रहनी।

धरीक्षण मिश्र रचनावली (अलंकार-दर्पण) के प्रस्तावना में प्रो. रामचंद्र तिवारी जी लिखले बानी कि 'भोजपुरी भाषा आ साहित्य के गौरव श्री धरीक्षण मिश्र के सामने संस्कृत आ हिंदी अलंकार निरूपण के पूरा परंपरा आ ओहसे लब्ध संपदा विद्यमान रहे। ओहमें से ऊहाँ के केतना के देखनी-परखनी, केतना के अपनवनी, ई निर्णय कइल कठिन बा। ऊहाँ के स्पष्ट रूप से अलंकार-निरूपण के मूल स्रोत के कहीं उल्लेख नइखीं कइले। ऊहाँ के भेद-प्रभेद के साथे लगभग 140 अलंकारन के निरूपण कइले बानी। ओहमे से कुछ अइसन बा जवना के सामान्यतः हिंदी अलंकार ग्रंथन में निरूपण ना होला। उदाहरणतः विपरीत, पिहित, विधि, मिथ्याध्यवसित, प्रतिषेध, लेश, श्लेषोपमा, रसनोपमा, ललित, समुच्चयोपमा, आदि अइसनके अलंकार बा।'

प्रोफेसर तिवारी जी के एही कथ्य से अनुमान लगावल जा सकऽता कि पं. धरीक्षण मिश्र जी हिंदी के सथवे संस्कृतो के अलंकार-निरूपण परंपरा से बढ़िया से परिचित रहनी। उहाँ के 'दीपक', 'रूपक', 'उपमा', 'उत्प्रेक्षा', 'अपह्नुति' आ 'अतिशयोक्ति' के भेद-प्रभेदन के विस्तार से वर्णन कइले बानी। पं. धरीक्षण मिश्र जी एगो अलंकार 'क्षेपक' के चर्चा कइले बानी बाकिर ओकर पहिचान नइखीं बतवले। कई बेर अइसन लागेला कि ऊहाँ के कइगो अलंकार गढ़ले बानी। कबो नाम ना बुझाइल त 'अनिर्णीत' नाम दे दिहनी। 'अनिर्णीत' के एगो उदाहरण देखीं -

पहिले के हीरो सभे रहे सकल गुण धाम
अब के हीरो लोग बा होत बहुत बदनाम।
(प्रस्तावना, अलंकार-दर्पण)

कलापक्ष के तनिक अलगे हट के देखल जाव तऽ वइसे तऽ पण्डित धरीक्षण मिश्र सामाजिक जीवन के विद्रूपता के कवि रहनी, समाज के सगरो वर्ग आ श्रेणी पर ऊहाँ के कविता लिखनी, बाकिर 'कवना दुखे डोली में रोअत जालि कनियाँ' से तत्कालीन समाज के कुव्यवस्था पर एगो लकीर खींच दिहनी। बेटी के एह पीड़ा के, नारी के एह बिपत के साहित्यकारन में सबसे पहिले धरीक्षण मिश्र जी रेखांकित कइनी। डॉ. वेदप्रकाश पाण्डेय अपना विनिबंध में लिखत बानी कि धरीक्षण मिश्र संस्कृत के आचार्य लोग भामह, उद्भट, रुद्रट, बामन, दंडी, मम्मट, भरत, रुय्यक, विश्वनाथ, पंडितराज जगन्नाथ, जयदेव, अप्पय दीक्षित, भोज, वाग्भट, शोभाकर मित्र आ जयरथ अउरी हिंदी के आचार्य लोग - केशव, भूषण, देव, भिखारी दास, मुरारीदीन, रामशंकर शुक्ल 'रसाल', बिहारी लाल भट्ट, कन्हैयालाल पोद्दार आ जगन्नाथदास भानु के परम्परा के भोजपुरी के आचार्य रहनी। ऊहाँ के भेद -प्रभेद सहित भोजपुरी के एक सौ चालीस गो अलंकारन के स्वरचित लक्षण-उदहारण देत वर्णन कइले बानी। ओहमें शब्दालंकार आ अर्थालंकार दूनो बा।

कवि जी कविता में अलंकारे क लेखाँ छंदो के प्रयोग के बड़ा जरूरी मानी। छंद आ अलंकार, दूनो दृष्टि से ऊहाँ के रीतिकाल के आचार्य लोग के अनुगामी रहनी। उहाँके वंशस्थ, द्रुतविलंबित, लावनी, हरिगीतिका, शशिवदना, शिखरिणी, इंद्रवज्रा आदि छंदन के भरपूर उपयोग कइले बानी। छंद आ अलंकारन के दृष्टि से सबसे समर्थ आचार्य कवि केशवदास के आपन आदर्श मानत कवि जी उहाँ से तनिको

कम छंदन आ अलंकारन के स्थापना नइखीं कइले। जे तरे केशवदास खातिर कहल जाला कि जहाँ बाकी कवि लोग कविता के रचना कइल, ओहिजा ऊ छंद रचलन। जब कविवर मिश्र जी के रचना देखल जाला तऽ एकदमें फरछीन हो जाला कि आज केशवदास के कविताई भोजपुरी के आवरण में फेरु से जीवंत हो गइल बा। भोजपुरी भाषा में अनेक छंदन के फेर संजीवनी दे के धरीक्षण मिश्र जी अपना भोजपुरी साहित्य के जवन समृद्धि देहले बानी, ऊ अनन्त काल ले अनुकरण, शोध आ पूजा के काज बाटे। डॉ. वेदप्रकाश पाण्डेय लिखले बानी कि आचार्य केशवदास हिंदी के जइसन अकेला आ विरल कवि बाड़े, ओहिसने छंदन के विविधता के ले के भोजपुरी के अनगिनत मौलिक रूप ढाले वाला धरीक्षण मिश्र एगो विलक्षण कवि रहलें।

पं. धरीक्षण मिश्र जी के रचनन के प्रकाशन के बात अगर कइल जाव तऽ सबसे पहिले वर्ष 1977 में 'शिव जी की खेती', आइल। ओकरा बाद 1995 में 'कागज के मदारी', 2004 में 'अलंकार दर्पण', 2005 में 'काव्य दर्पण', 2006 में 'काव्य मंजूषा' के प्रकाशन भइल। कविवर के उत्तर-प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ से 1980 में मिलल सम्मान के सथवे 'अंचल भारती सम्मान' से राज्यपाल मोतीलाल बोरा द्वारा 1993, 'भोजपुरी रत्न अलंकरण' द्वारा अखिल भारती भोजपुरी परिषद लखनऊ 1993 में प्राप्त भइल। सन 1994 में श्री महावीर प्रसाद केडिया साहित्य आ संस्कृति संस्थान देवरिया से 'श्री आनन्द सम्मान', 1994 में उत्तर-प्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन उरई से 'गया प्रसाद शुक्ल सनेही पदक', 1995 में प्रथम विश्व भोजपुरी सम्मेलन देवरिया में पूर्व प्रधान मंत्री चन्द्रशेखर द्वारा पहिलका 'सेतु सम्मान', 1997 में साहित्य आकादमी नई दिल्ली द्वारा 'भाषा सम्मान', विश्व भोजपुरी सम्मेलन नई दिल्ली द्वारा 2000 में मरणोपरांत 'भोजपुरी रत्न' आदि सम्मान से सम्मानित भइनी।

साधना के रूप में कविता रचे वाला ओह महाकवि के व्यक्तित्व एकदम्मे सादगी भरल रहे, बाकिर भोजपुरी में कविता के कलापक्ष सबसे समृद्ध। ऊहाँ के विलक्षणता के देन ह कि कइगो विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में ऊहाँ के रचना के ले के भोजपुरी भाषा के पढ़ाई होत बा। जीवन भर हर तरह के विसंगतियन पर प्रहार करे वाला ओह महामना कवि के 1997 के कार्तिक कृष्ण नवमी के दिने बरियारपुर स्थित

अपना कुटिया में राम राम लिखत साँस हमेशा खातिर रूक गइल।

आज कविवर नइखीं बाकिर ऊहाँ के कविताई भोजपुरी जन के मन में बसल बा। ऊहाँ के विचार आ दृष्टि से भोजपुरी साहित्य समृद्ध बा। 117वाँ जनम- दिन पर छपल स्मारिका में श्री सुरेंद्र पाण्डेय जी लिखत बानी कि 'ऊहाँ के बराबर कहेब कि हम संस्कृते के विद्वान लोग के विद्वान मानीले। ऊहाँ के ई सहज उक्ति कविपति द्विवेदी जी के प्रति अतिशय श्रद्धा के अभिव्यक्ति हऽ। अपना आचार्य श्री हील के स्मरण ऊहाँ के जवना आदर भाव से करीं, शायद संस्कृत वैयाकरण मुनित्रय (पाणिनि, कात्यायन आ पतंजलि) के करेला लोग।'

अलंकार, रस, छंद के आग्रही कविवर धरीक्षण मिश्र जी के बारे में कहल जाला कि उहाँ के कलम के मदारी रहनी। श्री आर. डी. एन. श्रीवास्तव जी अपना एगो कविता में लिखले बानी कि 'कागज के मदारी भले केहू होई, बाकिर कवि जी कलम के मदारी रहनी।' बातों साँचे हऽ, कविवर जवना विविधता आ चमत्कारपूर्ण ढंग से शब्दन के प्रयोग कइले बानी, ऊ भोजपुरी साहित्य में बड़ा कम मिली। क्षेपय अलंकार के एगो उदाहरण में उहाँ के शहर आ अथान के नाव के उपयोग के उदाहरण देखत बनेला -

पट ना दे उरवा मुखा छपरा देति उजार।
भोरे खुरहुरिया उठा सासुर सिसवा झार।।
भाट पार ना पा सके कहि भटिनी गुण ठीक।
सोहनरिया मझगाँव जहँ मठिया ओसे नीक।।
चख नी के घर से लिया तर कुलवा का बाट।
बीच राह में मिल गया हमें लबनियाँ घाट।।

कवि जी अलंकारन के भेद बताईं चाहें उदाहरण, शब्दन के प्रयोग कबो बोझिल ना लागेला। पढ़त-सुनत समय मन में गुदगुदियो बरेला आ लक्षणों छछात लउकेला। वस्तूत्प्रेक्षा (स्वरूपोत्प्रेक्षा) के उदाहरण दोहा छंद में देखीं -

सोहत देशी भँइसि के सींघि बढ़ल छितनार।
चील मनो बइठल हवे पूरा पाँखि पसार।।

पंडित धरीक्षण मिश्र के कविताई भोजपुरी साहित्य के मानसरोवर ह। भोजपुरी साहित्य के सगरो पाठक लोग के एक बेर दर्शन करहीं के चाहीं। प्रस्तुत लेख के इहें उद्देश्य बा, काहें कि ऊहाँ के काव्य-कला के क्षेत्र एतना फइलल बा कि एगो छोटहग लेख में कुछू नइखे कहा सकत। ऊहाँ के कला-चेतना पारा के एगो ठोप जइसन बा, जवना के कवनो रूप के बरतन में लीं, ओही स्वरूप के हो जाई। जवना के कइसहूँ पकड़े के जतन कहीं, कबो पूरा ढंग से ना पकड़ाई। एक छोर छुटिए

जाई। पं. धरीक्षण मिश्र भोजपुरी साहित्य के हमार सबसे प्रिय कवि हईं। ई लेख ऊहाँ का अथाह कविताई रूपी सागर के एक बून पानी बा। ई मानसरोवर के पानी ह। ओठे लगा के देखीं, पियास आ लालच बढ़ि जाई।

कविवर पं. धरीक्षण मिश्र जी के साहित्य के अध्ययन कइला के बाद केहू एह बात के नइखे टाल सकत कि बाबा कवनो तरे साधारण कवि ना रहनीं। ऊहाँ के सिरजना से भोजपुरी एतना समृद्ध बा कि आचार्यत्व का पक्ष पर केहू तनिको डिगा नइखे सकत। भोजपुरी के एतना धनिक बनावे खातिर ओह आचार्य कवि के बेर-बेर नमन आ प्रणाम।

संपादक, सर्व भाषा पत्रिका, नई दिल्ली।

किताबि : एक नजर में

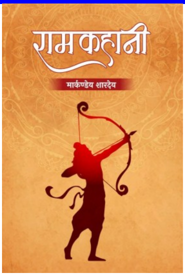

रामकहानी
(रामकथा पर हिंदी उपन्यास)
मार्कण्डेय शारदेय

प्रथम संस्करण - 2020
पृष्ठ : 344
मूल्य - 450.00/-

प्रकाशक
सर्व भाषा ट्रस्ट
जी-65-66, गली सं. -20, शाजापुर, उत्तमनगर, नई दिल्ली - 110059

लेखक के कहनाम बा कि राम वेद का बाद अइलन।

"मैं डंके की चोट पर तो नहीं, पर विनम्रता के साथ यही कहूँगा कि जब रघुनन्दन को 'वेदवेदांग-तत्त्वज्ञः' कहा गया है तो स्पष्ट है कि वेद-वेदांग उनके पहले से ही थे। चूँकि वे (वेद) ज्ञानकोश हैं और समय-समय पर उनका परिवर्द्धन होता रहा है, इसलिए मूल वेदों से पश्चाद्वर्ती ही उन्हें माना जाए।"
(रामकहानी का भूमिका से)

संस्मरण

कृष्णानंद कृष्ण : एगो इयाद

रामनिहाल गुंजन

भोजपुरी के कवि, कहानीकार आ आलोचक कृष्णानंद कृष्ण (1947-2019) आरा शहर के पास के एगो गाँव 'नहरी चाँदी' के रहेवाला रहन। ऊ हमरा से तब परिचित भइले, जब हम पटना सचिवालय में 1980 के आस-पास काम करत रहलीं। उनका से हमार पहिलकी भेंट आरा में हिंदी साहित्य-सम्मेलन का एगो गोष्ठी में भइल रहे। ऊ हमरा के पहिले से जानत रहस। ओह घरी हम आरा का एगो स्कूल में अध्यापन करत रहलीं। ओह गोष्ठी में डॉ. देवराज उपाध्याय भी मौजूद रहस, जे आचार्य नलिन विलोचन शर्मा के बहनोई रहस। उपाध्याय जी बज्र बधिर रहनी। एह से ऊ केहू से लिख के बात-चीत करत रहले। हम गोष्ठी में जब निराला जी का बारे में बतकही करत रहलीं, तब संयोग से उनकर कहल एगो बात के खंडन कइले रहलीं, जेकरा खातिर उपाध्याय जी थोड़ा दुखी भी भइले, गोष्ठी में मौजूद प्रो. रामेश्वर नाथ तिवारी आ चंद्रभूषण तिवारी हमरा से आपन सहमति जतवले। ओही गोष्ठी में अचके में कृष्णानंद कृष्ण हमरा भीरी आके आपन परिचय दिहले। बाद में उनका से पटना में बराबर भेंट होखे लागल।

कृष्णानंद पाठक, जे कृष्णानंद कृष्ण के नाम से भोजपुरी आ हिन्दी में लिखत रहले, हमरा आफिस में बराबर मिले खातिर आवे लगले। उनकरे से पांडेय कपिल का बारे में पता चलल त हम कपिल जी से अक्सर राजभाषा विभाग में मिले जाए लगलीं। उनकर भोजपुरी पत्रिका 'उरेह' आ बाद में भोजपुरी साहित्य सम्मेलन पत्रिका भी हमरा मिले लागल। दूनो पत्रिकन में हम बराबर लिखत रहनी। कपिल जी से थोरही दिन में आत्मीयता जइसन हो गइल। अब उनकर सम्मेलन पत्रिका का ओर से निकलल सब किताबो हमरा भेंटे लागल। एह बात में सच्चाई बा कि

कपिलजी आ दोसर-दोसर भोजपुरी लेखकन से हमार परिचय करावे में कृष्णानंद के भूमिका रहल। हमरा संपर्क में अइला पर हमरा से उनका हिंदी के पत्र-पत्रिको मिले लगली स। असल में कृष्णानंद सचिवालय के पी.एच.ई.डी. विभाग में कनीय अभियंता का पद पर कार्यरत रहले आ हम नया सचिवालय के खनन विभाग में रहलीं। एहसे हमनी के भेंट-मुलाकात बराबर हो जात रहे। ऊ साँझि के समय हमरा साथे हो लेत रहले आ हमनीके पैदले पटना स्टेशन का ओर चल परत रहलीं जा। ई करीब-करीब दू-तीन दिन बीच करके बराबर जारी रहल। एही बीच एक दिन ऊ बतकही में बतवले कि उनकर हिंदी पत्रिका 'पुनः' के कोई खास चर्चा नइखे होत। एहसे ऊ हमार सहयोग चहले। हमरो लागल कि अगर हमार सहयोग से 'पुनः' के कायाकल्प हो जाई त हमरो संतोखे होई। हम एगो योजना बनाके ओकर अगिला अंक खातिर नीक-नीक कहानियन के चुनाव कर दिहलीं आ आपन प्रेमचंद के अधूरा उपन्यास 'मंगलसूत्र' पर लिखल लेख छपे खातिर दे दिहलीं। अगिला अंक निकलते ओह अंक पर अप्रत्याशित रूप से प्रशंसामूलक पत्र पाके कृष्णानंद गदगद हो गइले। ओकरा बादो ऊ कई गो अंक निकलले। एक अंक खातिर ऊ हमरा से वृंदावन विहारी के लिखल कहानी 'अर्धांगिनी' के हिंदी अनुवाद चहले त हम अनुवाद कइके दे दिहले रहीं।

कृष्णानंद बाद में पांडेय कपिल का साथे कवनो तरह के मतभेद भा अनावश्यक विवाद का चलते उनका से अलग हो गइले, जेकरा से उनकर साहित्यिक स्वास्थ्य पर बुरा असर देखल गइल। ई साँच बात बा कि कपिल जी कृष्णानंद के आपन अनुज जइसन स्नेह देत रहले बाकिर उनकर व्यवहार से ऊ दुखी रहस। ओकरा बादो कपिल जी सक्रिय रहले आ आपन रचना कार्य करत रहले आ आपन भोजपुरी गजल आ दूनो पत्रिकन का संपादकीय लेखन के संग्रह भी प्रकाशित करे के दिसाईं प्रयत्नशील रहले। ई बात सही बा कि कपिल जी के लेखकीय आ संपादकीय अवदान काफी रहल बा। एहसे उनकर तुलना कृष्णानंद कृष्ण से ना कइल जा सके। ऊ आपन काम एगो मिशन के तहत करत रहले। एहसे आज भी लोग उनका के सम्मानपूर्वक इयाद करेले। कपिल जी के संपादन में निकलल 'उरेह' का बारे में ब्रजकिशोर जी लिखले बाड़े- "उरेह निश्चित रूप से भोजपुरी पत्रकारिता के स्तरीय राह बनवलस।" बाद में जब भोजपुरी

सम्मेलन पत्रिका निकले लागल त ओकर त्रैमासिक आ मासिक अंकन के प्रकाशन करे में पांडेय कपिल के मुख्य भूमिका रहल। एह तरे देखल जाव त कपिल जी के भोजपुरी का विकास में उल्लेखनीय योगदान रहल बा।

ओइसे त कृष्णानंद कृष्ण हिंदी आ भोजपुरी- दूनो भसन में लेख, कविता आ कहानी लिखत रहले। उनकर शुरू में कहानी के एगो किताबि 'एह देस में' छपल रहे, जवना में 'कालो दी' नाम के कहानी भी संकलित रहे, जेकर चर्चा भी भइल आ ओही कहानी का बल पर ऊ भोजपुरी के सेसर कहानीकारन में शामिल हो गइल रहन। उनकर दू गो आउर कहानी संग्रह बा- 'रावन अभी मरल नइखे' आ 'गाँव अभी गरम बा'। उनकर कहानियन पर लिखल आलोचना पुस्तक बा- 'भोजपुरी कहानी : विकास आ परंपरा'। कृष्णानंद हिंदी में भी कहानी लिखले रहस, जेकर संग्रह 'सही निर्णय' का नाम से प्रकाशित रहे। ओइसे त ऊ भोजपुरी में सॉनेट भी लिखले रहले, जेकर संग्रह भी छपल बा। बाद में लिखल उनकर भोजपुरी गजलन के एगो संग्रह- 'नया सूरज चढ़त जाता' नाँव से छपल रहे। देहावसान के पहिले उनकर हिंदी में लिखल कुछ नवगीत नचिकेता का संपादन में प्रकाशित 'समकालीन गीत कोश' में पृ.सं. 215-216 पर प्रकाशित भइल बा, जवना के देखला से साफ जाहिर हो जाता कि कृष्णानंद समाज, जीवन अथवा मौसम के बेहतर बदलाव में यकीन करत रहले।

कृष्णानंद कृष्ण सेवानिवृत्त (अवर प्रमंडल पदाधिकारी का पद से) भइला का बाद कई तरे के बीमारियन का चपेट में आ गइल रहन, जेकरा से उनकर पिछला साल बहत्तर साल का उमिर में देहांत भ गइल बाकिर ईहो सच्चाई बा कि ऊ आपन कृतियन के साथे अभिन्न हो गइल बाड़े। अगर उनुकर असंकलित-अप्रकाशित रचनन के प्रकाशित करे के दिसाईं प्रयास कइल जाई त ऊहे साँचो के श्रद्धांजलि साबित होई।

नया शीतल टोला, आरा- 802301 (बिहार)
मो. 7250201038

**जय
मातृभाषा
भोजपुरी**

सोस्ती सिरी पत्री लिखी......

-----प्रतिक्रिया- **सँझवत**- 4, 5-6 पर-----

'सँझवत' के डॉ. कमला प्रसाद मिश्र 'विप्र' विशेषांक मिलल। धन्यवाद। पढ़ के डॉ. विप्र का लेखकीय व्यक्तित्व के पुरहर जानकारी पाके ओह महान भोजपुरी साधक का प्रति हमार माथ सरधा से झुक गइल। रउरा ओह अन्हार होत कोठरी में 'सँझवत' देखाके अँजोर क दिहलीं, जहाँ ज्योति के बहुत जरूरत रहल ह।

संपादकीय का बहाने कई बिंदुअन पर विचार बहुत उपयोगी बा। डॉ. विप्र जी से बातचीत का क्रम में भोजपुरी से जुड़ल कई तरह के जानकारी मिलल।

'किताबि : एक नजरि में' विप्र जी का सभ कृतियन के सामान्य जानकारी पवला के आबाद विस्तार से जाने खातिर पत्रिका में एक से एक लेख सम्मिलित बाड़े सँ। कुछ रुचिगर संस्मरणन का अलावा विप्र जी के एक-एक गो किताब के केंद्र में रखके लिखाइल लेख मेहनत का साथे मनगर होके लिखइला से दमगर बन परल बाड़े सँ। अधिकतर निबंधकार परिचित आ भोजपुरी के सेसर कलमकार बाड़े। एहसे 'को बड़ छोट कहत अपराधू।" सचहूँ विप्र जी ओह युग के भोजपुरी विभूति रहीं जब भोजपुरी के नाँव लेबेवाला आ कलम चलावेवाला गिनले चुनल लोग रहल। ओह् समय विप्र जी के लिखल भोजपुरी रचना मील के पत्थर भइली सँ।

'सँझवत' के ई विशेषांक विप्र जी का सृजन कर्म के बारे में जानकारी चाहेवाला पाठक वर्ग के संतुष्ट करी, अइसन पूरा भरोसा बा, बाकिर विप्र जी का समूचा कृति मन के समेटि के रचनावली के प्रकाशन बहुत जरूरी बा ताकि अगली पीढ़ी उहाँ का साहित्य साधना से लाभ उठा सके। 'सँझवत' का एह विशेषांक खातिर डॉ. विमल के हार्दिक बधाई।

सूर्यदेव पाठक 'पराग', द्वारा- देवेंद्र मिश्र, सी-449-एफ, इंदिरा नगर, लखनऊ-226016

'सँझवत' के नवका अंक आजुए मिलल हा। अंक बढ़िया निकलल बा। छपाई-सफाई सराहनीय बा। बहुत बहुत धन्यवाद !

भगवती प्रसाद द्विवेदी, पटना।

सँझवत' के अंक हमरा परसों मिलल हा। तमाम परेशानियन के बादो रउआँ एगो बहुत बढ़िया- हर दृष्टि से समृद्ध अंक निकलले बानी। संयुक्तांक निकलल

बा, बाकिर दू अंक के बराबर सामग्री के साथे निकलल बा। एकरा पहिले स्मृतिशेष विप्र जी पर केंद्रित विशेषांको अतने तइयारी के साथे रउआँ निकलले रहीं । पत्रिका के अइसन स्तरीय अंकन के सम्पादन-प्रकाशन खातिर रउआँ आ सीमा जी समेत सउँसे 'सँझवत'-परिवार के हमरा तरफ से हृदय से बधाई आ शुभकामना बा।

पहिले बात 'विप्र' जी पर केंद्रित विशेषांक के। ई विशेषांक बहुत बढ़िया निकलल बा। राउर संपादकीय जहाँ विप्र जी के साहित्यकार आ भोजपुरी आंदोलन के संगठनकर्ता व्यक्तित्व के महत्त्व के बहुत बढ़िया से रेघरिअवले बा, ओहिजे रउआँ द्वारा लिहल गइल विप्र जी के साक्षात्कार से उहाँके जीवन से संबंधित बहुतेरी बातन के बहुते रोचक आ ज्ञानवर्धक जानकारी मिलत बा। खास करके उहाँके भोजपुरी भाषा आ साहित्य के साथे जुड़ाव के पूरा पृष्ठभूमि के जानकारी देत जवना ढंग से डॉ सच्चिदानंद सिन्हा के साथे भइल अपना बातचीत के ब्यौरा देले बानी, ऊ अद्भुत बा। कतना दिन पहिले लेल गइल साक्षात्कार के पढ़के अइसन लागत बाटे, जइसे ऊ विशेष रूप से एही विशेषांके खातिर लेल गइल होखे। निश्चित रूप से ई साक्षात्कार भोजपुरी का साक्षात्कार साहित्य विधा के बहुत ऊँचाई पर पहुँचावे के काम करी। एही तरे भाई भगवती प्रसाद द्विवेदी जी विप्र जी के व्यक्तित्व आ कृतित्व के बहुत सुंदर-संपूर्ण परिचय दिहले बानी। बाकी आलेख भी बहुत मन लगा के लिखल गइल बाड़न स। विप्र जी के कृतियन के परिचयात्मक समीक्षा भी पठनीय बाड़ी स। एकरा खातिर हम भाई कन्हैया सिंह 'सदय', रामेश्वर प्रसाद सिन्हा, डॉ अर्जुन तिवारी, डॉ. अरुण मोहन 'भारवि' समेत सभ रचनाकार मित्र लोग के बधाई देट बानी। अंत में ई कि विशेषांक निकले त अइसने निकले। एह संग्रहणीय अंक खातिर रउआँ के बार-बार बधाई।

'सँझवत' के संयुक्तांक अप्रैल-सितंबर, 20। अंक बढ़िया निकलल बा। लगभग सभ रचना स्तरीय आ पठनीय बाड़ी स। एकरा खातिर हम पत्रिका परिवार के हृदय से बधाई देत बानी।

पत्रिका के संपादकीय बहुत प्रासंगिक, सूचनाप्रद आ उत्साहवर्द्धक बा। कोरोना काल के भयावहता, तबाही आ अमानवीयता के निराशाजनक माहौल के साथहीं आशा आ उम्मीद के, सेवा आ सहयोग के जवन भावना समाज में दिखलाई पड़ल हा, ओकर

बहुते यथार्थ चित्रण एकरा में भइल बा। एकरा साथहीं भोजपुरी भाषा आ साहित्य संबंधी राउर चिंता हर बार के तरह अबकी बार भी बहुत गंभीरता से सामने आइल बा। निश्चित रूप से आगे एकर बढ़िया परिणाम सामने आई।

अबकी बार गद्य खंड बहुत दमदार बा। जयकांत जी, कृष्ण कुमार जी आ शारदेय जी के लेख बहुत ज्ञानवर्द्धक बाड़न स। अर्जुन तिवारी आ पुष्कर रउरा डायरी-संकलन 'नीक-जबून' के बढ़िया समीक्षा कइले बा लोग। ओइसे हमरा अर्जुन तिवारी जी के भोजपुरी के अँचरा से आरा के बाहर कइल पचत नइखे। हम एकर विस्तृत चर्चा स्व चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह जी के जयंती सह सम्मान समारोह के अवसर पर 23 जनवरी के भी कइले रहीं। कहानी-खंड में आशा रानी लाल जी के रचना हमरा कहानी से अधिका उहाँके आत्मकथा लागत बा। अविकल जी के कहानी ठीक बिया बाकिर उहाँके अंत करे में तनिका हड़बड़ा गइल बानी। सविता जी के कहानी भी अच्छा बिया बाकिर उहाँके अपना भाषा पर तनिक गंभीरता से काम करे के चाहीं। भोजपुरी के इतिहास पुरुष आदरणीय गदाधर बाबू अभी जवना स्थिति में बानी, ओहमें उहाँके साक्षात्कार ले लिहल हिम्मत के बात बा। एह हिम्मत खातिर कृष्ण कुमार जी बधाई के हकदार बानी। कवयित्री सुंदर आ शिवपूजन सहाय जी के परिचयात्मक टिप्पणी अच्छा बाड़ी स। सहाय जी के भोजपुरी प्रेम पर कुछ और जानकारी अपेक्षित बा। कविता खंड भी बढ़िया बा। विस्तार भय से ओकरा बारे में बस अतने।

एगो निवेदन करब। जरूरी आ उपयोगी भइला के बादो कवनो रचनाकार के एक से अधिका रचना देबे से भविष्य में बचे के कोसिस करब त बेहतर रही।

डॉ. नीरज सिंह, पूर्व प्रोफेसर अध्यक्ष, भोजपुरी विभाग, वीर कुँअर सिंह विश्वविद्यालय, आरा।

'सँझवत' के विप्र जी वाला अंक काल्हुवे साँझि खा मिलि गइल रहे, बतावल भुला गइल रहनीं हाँ। अभी उपरे उपर देखनीं हाँ, दू चार दिन लागी पूरा पढ़े में, तब कुछु बताइबि।

'सँझवत', अंक 5-6 पढ़नीं। विप्र जी पर डॉ. जयकान्त सिंह 'जय' के लेख प्रभावित कइलसि। शैदा जी पर मार्कंडेय जी के संस्मरण बढ़िया बा। बाकी कुल्हि मनबहलाव लेखा लागल, असहीं बिना मन के, लीखे खातिर, नाँव गिनावे खातिर लेखक कहाए खातिर लिखला लेखा। कवनो कहानी में दम

नजर ना आइल, हँ, कुछु कविता आपन छाप छोड़त नजर अइली स।

- अनिल ओझा 'नीरद', कोलकाता

भाई विमल जी,

'जगरम' के विप्र विशेषांक का बाद 'सँझवत' के ई विप्र-केन्द्रित अंक अपना भोजपुरी पुरखन खातिर जरूरी पिंड-दान नियन बा। हमरा समुझ से 'भोजपुरी जगरम काल के पुरोधा लोगन में एगो अउर नाम पांडेय नर्मदेश्वर सहाय (संपादक, 'अँजोर') के जोड़ लेवे के चाहीं।

जदपि राउर लिखल विप्र जी से साक्षात्कार, जितेन्द्र कुमार के 'मुंडदान' पर आलेख, लक्ष्मीकांत मुकुल के 'जगरम के विप्र विशेषांक' के चर्चा, पंकज तिवारी के लिखल 'राम काव्य परंपरा में मानस' आ गुंजन जी के विप्र रचित नाटक 'मंगल पाँड़े' पर लेख हमरा एह से अधिका महत्व के चीज लागल कि इन्हन में विप्र जी के अलग-अलग कृति-विशेष पर प्रकाश पड़ता। जो पहिलहीं से अलग-अलग लेखकन से उनका अलग-अलग कृतियन पर लिखवावल गइल रहित त राउर प्रयास आउर सार्थक होइत। अब देखीं कि शेष लेखकन में सुभावत: एके बात दोहरावल गइल बा, जइसे- उनकर जीवन-मृत्यु, किताब के नाम आदि।

एगो आउर लेख 'सिद्धाश्रम के बक्सर' (मार्कंडेय शारदेय) हमरा एहसे अच्छा लागल कि एहमें इतिहास बनाम मिथक पर सवाल उठावल गइल बा, जवन नवकी पीढ़ी के आगे ओझल नइखे जा सकत। महेंद्र शास्त्री, पांडेय नर्मदेश्वर सहाय, रघुवंशप्रसाद सिंह आ विप्र जी सहित रामेश्वर सिंह 'काश्यप' (लोहा सिंह) सरीखा महान भोजपुरी सेवकन के उपेक्षा भइल। हिंदी में अइसन गुटबाजी आ पक्षपात पर खुल के आलोचना लउकेला, बकिर भोजपुरी में मुँहदेखी बात होले। आज ई फाँक आउर चौड़ा होत जात बा। अब त संगठन में योग्यता ना, पइसा, जात आ पार्टी देखल जाता। 'एह घोड़ा पर के चढ़ी, पइसा दी, कलंदर चढ़ी।'

भोजपुरी जेकर नैसर्गिक भाषा बड़ुए, ओह आम मनई के चिंता आज के लेखन में कहल लेखकन के नैतिक दायित्व बनता। देखीं, हम विप्र जी के समय नौसिखुआ रहीं, बाकिर भोजपुरी सम्मेलन आ अकादमी के कार्य समितियन में शुरुए से भागीदार रहल बानी। हमरा सामने के बात बा कि जब छज्जूबाग में केदार पांडेय (पूर्व मुख्यमंत्री, बिहार आ तब रेल मंत्री, भारत सरकार) का आवास पर बइठक भइल आ सम्मेलन के संयोजक का रूप

में पांडेय कपिल के नाम आइल त रघुवंश बाबू लाठी लेके सभा से ई कहत चल देलीं कि “चललन रघुवंश अब इहाँ से।” काहेंकि उनकर मत रहे कि हर भोजपुरिया से संपर्क कइल जाव। एक-एक रुपया चंदा लेके उनहन के भोजपुरी से जोड़ल जाव। एहसे भाषा के व्यापक प्रचार-प्रसार मिली, संगठन मजबूत होई। अँखियान करे के बात बा कि रघुवंश बाबू कांग्रेस के कार्यकर्ता रहल रहीं आ विपरीत उनका सोच के भोजपुरी के भविष्य तथाकथित कुलीन सोचवालन के झोरी में डालि दिहल गइल। आज परिणाम सामने बा। हमनी एकरा मान्यता खातिर सरकार पर वोट के राजनीतिक दबाव बनावे के स्थिति में नइखीं, जबकि मैथिल लोग एही रास्ते एकवट होके आपन हक ले लेलन।

उमेद बा, अमनख ना मानबि आ आगहूँ प्रेम भाव बनवले राखबि।

तैयब हुसैन पीड़ित, पटना।

‘सँझवत’ के अंक 4+5/6 मिलल। कमला प्रसाद मिश्र ‘विप्र’ पर खास अंक आ सामग्री परोसे के बड़ा सुघर कोशिश भइल बा। अंको सुघर, देखनउक आ सहेजे जोग बनल बा, जेकरा पन्ना-पन्ना पर संपादक आ लेखक के मेहनत झाँकत बा। विप्र जी पर कन्हैया सिंह सदय, डॉ. अरुण मोहन ‘भारवि’, भगवती प्रसाद द्विवेदी, रामेश्वर प्रसाद सिन्हा, अतुल मोहन प्रसाद, मार्कण्डेय शारदेय, रामेंद्र मिश्र, जितेन्द्र कुमार, अजय कुमार, डॉ. अर्जुन तिवारी, रामेश्वर मिश्र विहान, गंगा प्रसाद ‘अरुण’, पंकज तिवारी, रामनिहाल गुंजन, मुकुल, संजय सागर के आलेख, डॉ विमल के बातचीत, प्रीतम के कविता के साथ विप्र जी के चुनिंदा कविता पाठकन के सामने परोस के बड़ा सुघर कोशिश कइल गइल बा, जवन काबिलेतारीफ बा। विप्र जी पर सहेजे जोग सामग्री परोसे खातिर बार-बार बधाई। सोस्ती सिरी में चिट्ठी छाप के पाठकन के विचार के सोझा राखके नीक काम भइल बा। पत्रिका के आवरण चित्र सुदर्शन बनल बा, जे से संपादक-प्रकाशक के सूझ-बूझ के पता चलता। बधाई। अंक 5/6 के का कहे के बा, एह में विप्र जी पर बाँचल रचना के सुंदर उपयोग सराहे जोग बा, सङही अन्य रचनन में डॉ. जयकांत सिंह ‘जय’, कृष्ण कुमार, शारदेय, डॉ. मंगल मूर्ति, डॉ रामजन्म मिश्र, डॉ. आद्या प्रसाद द्विवेदी, डॉ. पुष्कर कुमार, आशा रानी लाल, रामयश अविकल, डॉ. गदाधर सिंह, केशव मोहन पांडेय, आनंद संधिदूत, के आलेख के साथ छपल कविता कमाल के बाड़ी सन। बहुत सुंदर अंक बनल बा। कागज, छपाई, सफाई बड़ा सुघर देखनउक आ सहेजे जोग बा। बधाई आउर फेन बधाई। - **डॉ अरुण मोहन ‘भारवि’, प्रधान संपादक, गधपूरना, बक्सर (बिहार) पिन 802101**

मो. 7870841200/9431525695
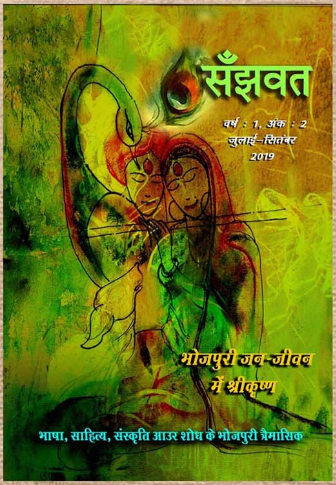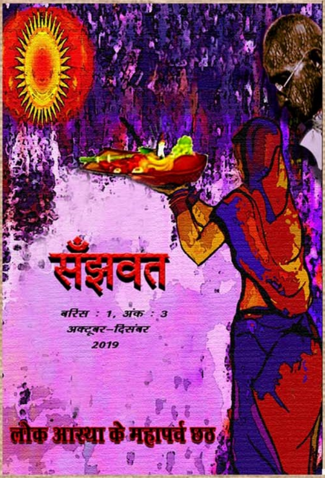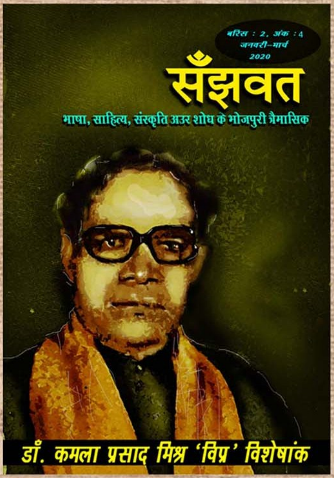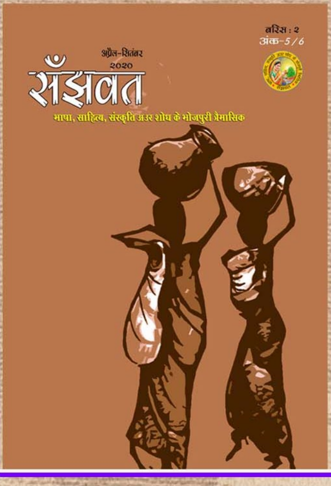
सँझवत के अविस्मरणीय अंक